पौलुस की कारागृह से लिखी पत्रियाँ

अध्याय 5

पौलुस और फिलिप्पियों

Manuscript

thirdmill

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय....................1
पृष्ठभूमि....................1
संबंध....................2
कारागृह में कष्ट....................3
फिलिप्पी की परिस्थितियां....................6
पौलुस के लिए चिंता....................6
कलीसिया के लिए समस्याएं....................7
संरचना एवं विषयवस्तु....................9
अभिवादन....................9
आभार-प्रदर्शन....................10
प्रार्थना....................10
मुख्य भाग....................11
पौलुस की दृढ़ता....................11
दृढ़ बने रहने के उपदेश....................12
दृढ़ता की पुष्टि....................16
अंतिम अभिनंदन....................17
आधुनिक प्रयोग....................17
दृढ़ता की प्रकृति....................18
परिभाषा....................18
आवश्यकता....................19
आश्वासन....................20
दृढ़ता की विचारधारा....................20
नम्रता....................20
आशावाद....................23
आनन्द....................24
दृढ़ता की सेवकाई....................25
उपसंहार....................26

पौलुस की कारागृह से लिखी पत्रियाँ

अध्याय पाँच

पौलुस और फिलिप्पियों

परिचय

जब सैनिक युद्ध की अनिश्चितताओं का सामना करते हैं, तो उनके मन में मृत्यु के विचार प्राय: आते रहते हैं। वे ऐसे मार्गों की तलाश करते रहते हैं जिनके द्वारा वे स्वयं राहत प्राप्त कर सकें और अपने परिवार वालों को राहत प्रदान कर सकें। प्राय: वे आभार-प्रदर्शन और सलाह के पत्र लिखते हैं जिनमें वे अपने प्रियजनों को बहादुरी से जीने, और इस प्रकार से जीने को उत्साहित करते हैं जिनसे उन्हें सम्मान मिले।

कई रूपों में, फिलिप्पियों को लिखी पौलुस की पत्री भी उस पत्र के समान है जैसा एक सैनिक लिखता है जब उसे लगता हो कि किसी भी समय उसकी मृत्यु हो सकती है। पौलुस ने फिलिप्पियों को ऐसे समय में लिखा जब वह बहुत कष्ट सह रहा था, ऐसे समय में जब वह सोच रहा था जल्दी ही उसे शायद मार डाला जाएगा। और उसने उन लोगों को लिखा जिनसे वह प्रेम करता था। और इसलिए, फिलिप्पी में रहने वाले मसीहियों को लिखे उसके शब्द गंभीर परन्तु प्रेमपूर्ण; दुःखद परन्तु सांत्वना देने वाले, प्रशंसात्मक परन्तु कड़वी सच्चाई थे। पौलुस के दृष्टिकोण से वे शायद उसके विश्वासयोग्य मित्रों के प्रति सलाह और हार्दिक आभार के अंतिम शब्द हो सकते थे।

यह हमारी श्रृंखला- पौलुस की कारागृह से लिखी पत्रियों का पांचवा अध्याय है। और हमने इस अध्याय का शीर्षक दिया है- पौलुस और फिलिप्पियों, क्योंकि हम फिलिप्पी की कलीसिया को लिखी पौलुस की पत्री का परीक्षण करेंगे। इस पत्री में, पौलुस ने फिलिप्पियों को उत्साहित करने के लिए लिखा जो उसके द्वारा सहे जा रहे कष्टों से चंतित थे। अपनी मृत्यु की शीघ्र संभावना के पूर्वानुमान के साथ पौलुस ने स्वयं और फिलिप्पियों द्वारा सहे जाने वाले सताव और तनाव के समयों के लिए आशा और उत्साह से भरी एक पत्री लिखी।

हम पौलुस और फिलिप्पियों के अपने अध्ययन को तीन भागों में विभाजित करेंगे। पहला, हम फिलिप्पियों को लिखी पौलुस की पत्री की पृष्ठभूमि का सर्वेक्षण करेंगे। दूसरा, हम फिलिप्पियों की संरचना और विषयवस्तु पर ध्यान देंगे। और तीसरा, हम इस पत्री के आधुनिक प्रयोग की जांच भी करेंगे। आइए, फिलिप्पियों को लिखी पौलुस की पत्री की पृष्ठभूमि पर ध्यान देते हुए आरंभ करें।

पृष्ठभूमि

जिस प्रकार हमने इस पूरी श्रृंखला में कहा है, यह सदैव महत्वपूर्ण है कि हम पौलुस और जिनको उसने अपनी पत्रियां लिखीं उनकी परिस्थितियों को जान लें। इन विवरणों को जानना हमें पौलुस के संदेश पर आधारित रहने और इसे उस प्रकार ग्रहण करने में सहायता करता है जैसे पौलुस प्रदान करना चाहता था।

अत: जब हम फिलिप्पियों को लिखी पौलुस की पत्री को देखते हैं, तो हमें ऐसे प्रश्न पूछने की आवश्यकता है- फिलिप्पियों के लोग कौन थे? उनके जीवनों में और पौलुस के जीवन में क्या हो रहा था? और पौलुस ने उनको पत्री क्यों लिखी? इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तर इस पत्री में पौलुस की आधिकारिक शिक्षा को समझने और अपने जीवनों में उसे लागू करने में सहायता करेंगे।

जब हम फिलिप्पियों को लिखी पौलुस की पत्री की पृष्ठभूमि की जांच करते हैं तो हम तीन विषयों पर अपने ध्यान को लगाएंगे। पहला, हम फिलिप्पियों के साथ पौलुस के संबंध पर चर्चा करेंगे। दूसरा, हम कारागृह में पौलुस के कष्टों के कुछ विवरणों का उल्लेख करेंगे। और तीसरा, हम पौलुस द्वारा फिलिप्पियों को पत्री लिखे जाने के समय की उनकी परिस्थितियों पर चर्चा करेंगे। आइए, पौलुस और फिलिप्पी की कलीसिया के बीच संबंध पर ध्यान देते हुए आरंभ करें।

संबंध

फिलिप्पी मकिदुनिया के रोमी प्रान्त का एक महत्वपूर्ण नगर था, वह स्थान जो अब आधुनिक यूनान में पाया जाता है। यह वाया एग्नैशिया के करीब पाया जाता है, वह मुख्य मार्ग जो रोम नगर को इसके राज्य के पूर्वी प्रान्तों से जोड़ता है। और इसमें रोम के साथ एक विशेष ओहदा पाया जाता था, जिससे उसके पास इटली में रोमी कॉलोनी होने के समान अधिकार पाए जाते थे, और यह अपने नागरिकों को रोमी नागरिकता प्रदान करता था।

पौलुस ने अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान फिलिप्पी में कलीसिया की स्थापना की थी, लगभग 49 या 50 ईस्वी के दौरान। फिलिप्पी पहुंचने से पूर्व वह एशिया में सेवकाई कर रहा था। परन्तु तब उसने एक दर्शन देखा जिसमें एक व्यक्ति उससे मकिदुनिया में आकर सुसमाचार का प्रचार करने का आग्रह करता है। इस दर्शन के प्रत्युत्तर में पौलुस नियापुलिस में उतर कर मकिदुनिया गया, परन्तु शीघ्र ही फिलिप्पी नगर में चला गया जो नियापुलिस से लगभग 10 मील उत्तर-पश्चिम में था।

फिलिप्पी में पौलुस की अधिकांश गतिविधियों का प्रेरितों के काम 16:12-40 में वर्णन किया गया है। उदाहरण के तौर पर, यह फिलिप्पी में ही था कि पौलुस यूरोप में पहले व्यक्ति, व्यापारी स्त्री लुदिया, को विश्वास में लेकर आया। और फिलिप्पी में ही था कि उसे एक दासी लड़की से दुष्टात्मा निकालने के कारण कारागृह में डाला गया। यही वह स्थान था जहां एक जाने-माने दरोगा ने मसीह में विश्वास किया, क्योंकि वह अपने लिए पौलुस के रहम से बहुत ही द्रवित हो गया था।

फिलिप्पी में पौलुस की सेवकाई इतनी सफल थी कि जब वह नगर से गया तो फिलिप्पियों के मसीहियों ने पौलुस की आर्थिक आवश्यकताओं में समय-समय पर आर्थिक सहायता भेजकर उसकी सहायता की। फिलिप्पियों 4:15-16 को सुनें जहां पौलुस ने उनकी उदारता के बारे में लिखा :

> जब मैं ने मकिदुनिया से कूच किया तब तुम्हें छोड़ और किसी मंडली ने लेने देने के विषय में मेरी सहायता नहीं की। इसी प्रकार जब मैं थिस्सलुनीके में था; तब भी तुम ने मेरी घटी पूरी करने के लिये एक बार क्या वरन दो बार कुछ भेजा था। **(फिलिप्पियों 4:15-16)**

फिलिप्पी की कलीसिया ने पौलुस से प्रेम किया, और उन्होंने आर्थिक भेंटों के द्वारा निरन्तर उसकी सहायता की। फिलिप्पियों 4:10 और 18 के अनुसार पौलुस द्वारा पत्री लिखने के समय के आस-पास ही फिलिप्पियों ने उसके लिए एक उपहार भेजा था। वहां पौलुस के शब्दों को सुनें :

> अब इतने दिनों के बाद तुम्हारा विचार मेरे विषय में फिर जागृत हुआ है; निश्चय तुम्हें आरम्भ में भी इस का विचार था, पर तुम्हें अवसर न मिला। मेरे पास सब कुछ है, वरन बहुतायत से भी है: जो वस्तुएं तुम ने इपफ्रुदीतुस के हाथ से भेजी थीं उन्हें पाकर मैं तृप्त हो गया हूँ। **(फिलिप्पियों 4:10-18)**

यद्यपि फिलिप्पी में ऐसे कुछ विश्वासी थे जो आर्थिक रूप से संपन्न थे, परन्तु कलीसिया सामान्यत: बहुत ही गरीब थी, वे सदैव आर्थिक रूप से पौलुस की सहायता करने के योग्य नहीं थे। परन्तु जब उनके पास अवसर था तो उन्होंने उदारता से उसे दिया।

और जिस प्रकार फिलिप्पियों ने पौलुस से प्रेम किया, तो उसने भी उनके लिए असीम स्नेह का अनुभव किया। उसने प्रभु के प्रति उनके समर्पण, और सुसमाचार की सेवकाई में उनकी सहभागिता के लिए उनसे प्रेम किया। वे उसके घनिष्ठ मित्र थे, ऐसे लोग जिनकी संगति का उसने आनन्द लिया और जिनको उसने बहुत याद किया। सुनें किस प्रकार उसने फिलिप्पियों 1:4-8 में उनसे बात की :

> और जब कभी तुम सब के लिये विनती करता हूँ, तो सदा आनन्द के साथ विनती करता हूँ। इसलिये, कि तुम पहिले दिन से लेकर आज तक सुसमाचार के फैलाने में मेरे सहभागी रहे हो... तुम मेरे मन में आ बसे हो... मैं मसीह यीशु की सी प्रीति करके तुम सब की लालसा करता हूँ। (फिलिप्पियों 1:4-8)

वास्तव में फिलिप्पियों 2:12 और 4:1 में पौलुस ने फिलिप्पियों को अपने "प्रिय मित्रों" के रूप में संबोधित किया, जिसमें उसने यूनानी शब्द अगापेटोस का प्रयोग किया। अगापेटोस वह शब्द है जिसका प्रयोग पौलुस ने अपने करीबी सहकर्मियों और प्रिय मित्रों जैसे तिखिकुस, इपफ्रास, फिलेमोन, उनेसिमुस और लूका का वर्णन करने के लिए किया था। फिलिप्पियों की कलीसिया के लिए पौलुस का प्रेम अन्य कलीसियाओं के लिए उसके प्रेम की अपेक्षा अधिक विशिष्ट प्रतीत होता है, और यह केवल संबंध होने या परिचितता में ही नहीं बल्कि उनकी निरन्तर जोशपूर्ण मित्रता में भी प्रकट हुआ।

और हमें इससे चकित नहीं होना चाहिए। आखिरकार, यह कल्पना करना कठिन नहीं है कि पौलुस और लुदिया, उसकी मेजबान या पौलुस और दरोगा, जिसके जीवन को उसने बचाया था, और शायद पौलुस और उस दासी लड़की, जिसे उसने दुष्टात्मा से छुड़ाया था, के बीच एक घनिष्ठ संबंध था। सब घटनाओं में पौलुस का फिलिप्पी के विश्वासियों के प्रति विश्वास काफी बढ़ गया था। और उनकी भी उसके प्रति ऐसी ही भावनाएं थीं।

अब जब हम पौलुस और फिलिप्पियों के बीच प्रेमपूर्ण और सहायक संबंध को देख चुके हैं, इसलिए अब हमें कारागृह में प्रेरित के कष्टों के विवरणों की ओर मुड़ना चाहिए। फिलिप्पियों को पत्री लिखने के समय पौलुस किन बातों का सामना कर रहा था?

कारागृह में कष्ट

अपनी लम्बी सेवकाई में पौलुस ने प्राय: बहुत कष्टों का सामना किया। उसे बार-बार कोड़े लगाए गए, डंडों से मारा गया, हत्या करने वालों के द्वारा उसका पीछा किया गया। कई बार उसे कारागृह में डाला गया, और एक बार उस पर पत्थरवाह किया गया और उसे मरने के लिए छोड़ दिया गया। बहुत बार वह दु:खी और निराश भी हुआ। उदाहरण के तौर पर, अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा के दौरान उसने 2 कुरिन्थियों 1:8 में ये शब्द लिखे :

> हे भाइयो, हम नहीं चाहते कि तुम हमारे उस क्लेश से अनजान रहो, जो एशिया में हम पर पड़ा, कि ऐसे भारी बोझ से दब गए थे, जो हमारी सामर्थ से बाहर था, यहां तक कि हम जीवन से भी हाथ धो बैठे थे। (2कुरिन्थियों 1:8)

यहां पौलुस ने अपने द्वारा सही गईं भयानक परिस्थितियों के कारण पराजित होने की भावना, अर्थात् अस्थाई रूप से आशा खोने का वर्णन किया।

पौलुस जानता था कि जीवन वास्तव में आशारहित नहीं है, कि परमेश्वर हमें किसी भी विपत्ति से बचा सकता है। परन्तु वह भी एक मनुष्य था; दूसरों के समान उसमें भी कमजोरियां थीं। और सत्य यह है कि कभी-कभी परमेश्वर की सर्वोच्चता के बारे में जानना और उस पर विश्वास करना ही हमें निराशा से बचाने के लिए पर्याप्त नहीं होता। पौलुस ने भी संघर्ष किया। पौलुस भी हार मान लेना चाहता था। पौलुस ने भी तिरस्कृत महसूस किया था।

और जब हम फिलिप्पियों को लिखी उसकी पत्री के विवरणों को पढ़ते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि इस कलीसिया जिसे वह बहुत प्रेम करता था को पत्री लिखने के समय वह इसी प्रकार की भावनाओं से संघर्ष कर रहा हो। उसके धर्मविज्ञान ने उसको सत्य में स्थिर किया, और उत्साहित किया कि परमेश्वर कष्टों के माध्यम से भी भलाई के लिए कार्य कर रहा था। परन्तु पौलुस का हृदय फिर भी बोझिल था और उसका दुःख गहरा था।

फिलिप्पियों को लिखी अपनी पत्री में पौलुस ने उन सभी विपत्तियों को उजागर नहीं किया जो उसके मन में थीं। परन्तु उसने कुछ के बारे में अवश्य बात की, और उसने उस सामूहिक प्रभाव को भी प्रकाशित किया जो उसके मन पर पड़ रहा था। उदाहरणस्वरूप, उसने कष्टों से छुटकारे के रूप में प्राय: मृत्यु के विषय में बात की। जैसे, फिलिप्पियों 3:10 में उसने ये शब्द लिखे :

> और मैं उसको और उसके मृत्युंजय की सामर्थ को, और उसके साथ दुखों में सहभागी हाने के मर्म को जानूं, और उस की मृत्यु की समानता को प्राप्त करूं। **(फिलिप्पियों 3:10)**

इस पद में पौलुस ने प्रकट किया कि उसके वर्तमान कष्ट इतने अधिक थे कि उनसे बचने की सर्वोत्तम आशा मृत्यु ही थी। और उसने अपने वर्तमान कष्टों को मृत्यु के माध्यम के रूप में देखा। और फिलिप्पियों 1:20 में पौलुस ने इस प्रकार अपने दृष्टिकोण को स्पष्ट किया :

> मैं तो यही हार्दिक लालसा और आशा रखता हूँ, कि मैं किसी बात में लज्जित न होऊं, पर जैसे मेरे प्रबल साहस के कारण मसीह की बड़ाई मेरी देह के द्वारा सदा होती रही है, वैसा ही अब भी हो चाहे मैं जीवित रहूँ वा मर जाऊं। **(फिलिप्पियों 1:20)**

पौलुस में इस समय साहस की कमी थी, परन्तु उसे आशा थी कि परखे जाने से पहले उसे यह प्राप्त हो जाएगा। वह मसीह को सम्मान देना चाहता था, चाहे वह परीक्षा में स्थिर खड़े रहने के द्वारा हो या फिर अपने विश्वास के अंगीकरण को न त्यागते हुए गरिमा और निश्चय के साथ मरने के द्वारा। और इसके ठीक बाद पौलुस ने इन शब्दों के द्वारा मृत्यु की अपनी इच्छा व्यक्त की :

> क्योंकि मेरे लिये जीवित रहना मसीह है, और मर जाना लाभ है। पर यदि शरीर में जीवित रहना ही मेरे काम के लिये लाभदायक है... क्योंकि मैं दोनों के बीच अधर में लटका हूँ; जी तो चाहता है कि कूच करके मसीह के पास जा रहूँ, क्योंकि यह बहुत ही अच्छा है। **(फिलिप्पियों 1:21-23)**

जिस समय उसने यह लिखा, पौलुस मरना चाहता था। परन्तु सामान्यत: वह जीवित रहना और प्रचार करना- नए स्थानों पर और नए लोगों के पास सुसमाचार लेकर जाना और संसार में उद्धार लाना चाहता था।

अब सामान्य परिस्थितियों में मसीहियों को मरने की चाहत नहीं करनी चाहिए। हां, अपनी मृत्यु के समय हम अपने प्रभु के साथ होंगे, और हमें इसकी प्रतीक्षा करनी चाहिए, परन्तु इतनी नहीं कि हम मृत्यु

को एक मित्र के समान गले लगा लें। हमें जीवन के लिए रचा गया है और पवित्रशास्त्र सिखाता है कि मृत्यु एक शाप है। स्वयं पौलुस ने 1कुरिन्थियों 15:26 में मृत्यु को एक शत्रु कहा है। परन्तु पौलुस के जीवन के इस बिंदू पर उसकी परिस्थितियां इतनी कष्टकर थीं कि मसीह के साथ होने के लाभ उसे सेवकाई में बने रहने की चाहत और मृत्यु के लिए उसकी घृणा से अधिक लगे।

परन्तु पौलुस ने अपने व्याकुल मन को केवल मृत्यु की अपनी इच्छा से प्रकट नहीं किया। उसने कई अन्य स्थानों पर भी इसका स्पष्ट रूप से वर्णन किया। उदाहरण के तौर पर, फिलिप्पियों 2:27-28 में उसने इन शब्दों में इपफ्रुदीतुस की बीमारी से चंगाई का वर्णन किया :

> इपफ्रुदीतुस बीमार तो हो गया था, यहां तक कि मरने पर था, परन्तु परमेश्वर ने उस पर दया की; और केवल उस ही पर नहीं, पर मुझ पर भी, कि मुझे शोक पर शोक न हो। इसलिये मैं ने उसे भेजने का और भी यत्न किया कि तुम उस से फिर भेंट करके आनन्दित हो जाओ और मेरा शोक घट जाए। (फिलिप्पियों 2:27-28)

इपफ्रुदीतुस की मृत्यु पौलुस के पहले के कष्टों में और अधिक कष्ट जोड़ सकती थी। और यद्यपि इपफ्रुदीतुस का पुन: फिलिप्पी लौट जाना पौलुस की चिंताओं को कम अवश्य करेगा परन्तु इसे बिल्कुल समाप्त नहीं करेगा।

शायद पौलुस के दुःख और व्याकुलता, और मृत्यु के बारे में उसके कथनों का सर्वोत्तम स्पष्टीकरण यह है कि इस समय में उसका जीवन गंभीर खतरे में था। जिस प्रकार हमने पिछले अध्याय में देखा, उसने यह पत्री रोम या कैसरिया मरितिमा से लिखी होगी। यदि उसने रोम से लिखी हो तो शायद उसे अपेक्षा थी कि कैसर उसे दोषी ठहराएगा। और यदि उसने कैसरिया मरितिमा से लिखी हो तो वह यहूदियों द्वारा उसको मार डालने की योजना से चंतित होगा। पर चाहे जैसा भी खतरा वहां हो, ऐसा प्रतीत होता है कि पौलुस इस संभावना के बारे में सोच रहा था कि शीघ्र ही उसकी मृत्यु हो जाएगी।

उदाहरण के तौर पर फिलिप्पियों 1:20 में उसने आशापूर्ण रूप से लिखा “मसीह की बड़ाई मेरी देह के द्वारा सदा होती रही है, वैसी ही अब भी हो, चाहे मैं जीवित रहूँ या मर जाऊँ।”और 1:20 में उसने यह दर्शाया कि उसके समक्ष मरने का विकल्प भी हो सकता है, परन्तु उसने यह भी लिखा कि यदि मुझे इस देह में जीवित रहना भी हो तो इसका अर्थ मेरे लिए फलदायक परिश्रम होगा। फिर भी मैं किसे चुनूं? 2:17 में उसने इस संभावना के विषय में बात की कि “वह अर्घ के समान उंडेला जा रहा था।” और 3:10 में उसने सुझाव दिया कि मसीह के कष्टों में उसकी वर्तमान सहभागिता पौलुस को “उसकी मृत्यु में मसीह के समान बनने” की ओर अगुवाई कर सकती है।

परन्तु पौलुस पूरी तरह से आश्वस्त नहीं था कि उसकी मृत्यु होगी। इसी पत्री में अन्य स्थान पर उसने इस आशा को प्रकट किया था कि वह जीवित रहेगा। उदाहरणत: फिलिप्पियों 1:25 में उसने लिखा कि “मैं जानता हूँ कि मैं जीवित रहूँगा” और उसने इस आशा को दर्शाया कि वह फिलिप्पियों के प्रति सुचारु सेवकाई करने के लिए जीवित रहेगा।

पौलुस पूरी तरह से आश्वस्त नहीं था कि उसके साथ क्या होगा। एक ओर वह जानता था कि उसकी मृत्यु एक वास्तविक संभावना थी, और इसलिए उसने फिलिप्पी में अपने मित्रों को इस त्रासदी के लिए तैयार करने का प्रयास किया। दूसरी ओर उसे कुछ यह अपेक्षा भी थी कि वह जीवित रहेगा, और इसलिए उसने सर्वोत्तम की आशा रखने के लिए उत्साहित किया। परन्तु उसके भविष्य में उसके लिए जो भी था, अपनी पत्री लिखे जाने के समय वह बहुत कष्ट सह रहा था, इसलिए उसने दुःख और आशंका से संघर्ष किया।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

फिलिप्पियों के साथ पौलुस के रिश्ते और कारागृह में उसके दुःखों को देखने के पश्चात् हमें उन परिस्थितियों की जांच करनी चाहिए जो पौलुस द्वारा पत्री लिखे जाने के समय फिलिप्पी में थीं। ऐसी कौनसी परिस्थितियों का उन्होंने सामना किया जिन्होंने पौलुस के ध्यान और शिक्षा की मांग की?

फिलिप्पी की परिस्थितियां

पौलुस ने फिलिप्पी की कलीसिया की अनेक परिस्थितियों को संबोधित किया, परन्तु हम केवल दो विषयों पर ध्यान देंगे- पौलुस के लिए फिलिप्पी की कलीसिया की चिंता; और फिलिप्पी की कलीसिया में पाई जाने वालीं आंतरिक और बाहरी समस्याएं। आइए पौलुस के लिए फिलिप्पियों की चिंता का उल्लेख करते हुए आरंभ करें।

पौलुस के लिए चिंता

सामान्य रूप में फिलिप्पी की कलीसिया का प्रेरित पौलुस से मजबूत और प्रेमपूर्ण संबंध था। और जब उन्होंने कारागृह में उसके कष्टों के बारे में सुना तो वे निराश हो गए और उसके प्रति चिंतित हो गए। इसलिए, जितनी जल्दी हो सके उन्होंने पौलुस की भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भेंट और पौलुस को वह भेंट पहुंचाने के लिए और कारागृह में उसकी सेवा करने के लिए इपफ्रुदीतुस को भेजकर अपनी परवाह को प्रकट किया। पौलुस ने धन्यवाद के इस कथन को लिखते हुए इस भेंट का उल्लेख फिलिप्पियों 4:18 में किया :

> मेरे पास सब कुछ है, वरन बहुतायत से भी है: जो वस्तुएं तुम ने इपफ्रुदीतुस के हाथ से भेजी थीं उन्हें पाकर मैं तृप्त हो गया हूँ, वह तो सुगन्ध और ग्रहण करने के योग्य बलिदान है, जो परमेश्वर को भाता है। (फिलिप्पियों 4:18)

जैसे हम उल्लेख कर चुके हैं फिलिप्पी के लोग धनी नहीं थे, इसलिए यह भेंट उनकी ओर से एक महत्वपूर्ण त्याग के रूप में समझी गई। परन्तु उन्होंने उसे बहुत ही उत्सुकतावश भेजा था क्योंकि वे पौलुस की सलामती के विषय में चिंतित थे। और जिस प्रकार हम फिलिप्पियों 2:25 में पढ़ते हैं, फिलिप्पी की कलीसिया ने इपफ्रुदीतुस को भी कारागृह में पौलुस की सेवा करने के लिए भेजा था। वहां पौलुस के शब्दों को सुनें :

> पर मैं ने इपफ्रुदीतुस को जो... तुम्हारा दूत, और आवश्यक बातों में मेरी सेवा टहल करनेवाला है, तुम्हारे पास भेजना अवश्य समझा। (फिलिप्पियों 2:25)

स्पष्टत: इपफ्रुदीतुस ने पौलुस को यह विवरण भी प्रदान किया जिसमें फिलिप्पियों के इस भय को किया गया कि पौलुस को अन्य विश्वासियों के द्वारा सताया जा रहा था, और कि मृत्यु का खतरा उसके सिर पर मंडरा रहा था। और उनको लिखी अपनी पत्री में पौलुस ने इस बात को निश्चित किया कि फिलिप्पियों ने उसकी परिस्थितियों को अच्छी तरह से समझ लिया था, और उसने उनकी परवाह के लिए अपनी सराहना को व्यक्त किया।

उदाहरण के तौर पर फिलिप्पियों 1:15-17 में उसने स्वीकार किया कि सुसमाचार के कुछ प्रचारक उन्हें सता रहे थे। उसने इन शब्दों के साथ इस परिस्थिति का वर्णन किया :

> कितने तो डाह और झगड़े के कारण मसीह का प्रचार करते हैं... और कई एक तो सीधाई से नहीं पर विरोध से मसीह की कथा सुनाते हैं, यह समझ कर कि मेरी कैद में मेरे लिये क्लेश उत्पन्न करें। (फिलिप्पियों 1:15-17)

वास्तव में पौलुस के दु:खी होने का एक कारण यह था कि उसके आस-पास के कुछ ही विश्वासी और मसीही अगुवों ने सच्चाई से सुसमाचार की सेवकाई के लिए अपने हृदयों को समर्पित किया था। इस संबंध में फिलिप्पियों 2:21 में पौलुस के शब्दों को सुनें :

> क्योंकि सब अपने स्वार्थ की खोज में रहते हैं, न कि यीशु मसीह की। (फिलिप्पियों 2:21)

सारांश में, इस समय में पौलुस की परवाह करने पर फिलिप्पियों को सही ठहराया गया था। पौलुस की विपत्तियां बड़ी थीं और उसके लिए सहायता बहुत ही कम थी।

परन्तु फिलिप्पी के लोग केवल इसी बात से चिंतित नहीं थे कि पौलुस कष्टों को सह रहा है। वे इस बात से चिंतित थे कि कहीं उसकी मृत्यु न हो जाए, चाहे वह उसकी हत्या के द्वारा हो या फिर सार्वजनिक दण्ड के द्वारा। और ये डर उचित भी थे। जैसा कि हमने पिछले अध्यायों में देखा है, यहूदियों ने बहुत बार पौलुस की हत्या करने का प्रयास किया था, और जिस अपराध का उस पर आरोप लगाया था उसके कारण वह मृत्यु की सजा का हकदार था। अत: प्रेरित के प्रति गहरी चिंता से फिलिप्पियों ने स्वयं को पौलुस के लिए प्रार्थना करने में लगा दिया। फिलिप्पियों 1:19 और 20 में उसने उत्साह के इन शब्दों के साथ उनकी प्रार्थनाओं के लिए उनका आभार प्रकट किया :

> क्योंकि मैं जानता हूँ, कि तुम्हारी विनती के द्वारा, और यीशु मसीह की आत्मा के दान के द्वारा इस का प्रतिफल मेरा उद्धार होगा। मैं तो यही हार्दिक लालसा और आशा रखता हूँ, कि... मसीह की बड़ाई मेरी देह के द्वारा सदा होती रही है, वैसा ही अब भी हो चाहे मैं जीवित रहूँ वा मर जाऊं। (फिलिप्पियों 1:19-20)

पौलुस फिलिप्पियों की प्रार्थनाओं के लिए बहुत ही आभारी था और उसने उन्हें आश्वस्त किया कि मृत्यु भी उसके कष्टों से एक स्वागतयोग्य छुटकारा होगी।

पौलुस की सलामती के प्रति फिलिप्पियों की चिंता या परवाह पर चर्चा करने के बाद हमें कलीसिया में पाई जाने वाली उन समस्याओं पर ध्यान देना चाहिए जो अनेक स्रोतों से उत्पन्न हुई थीं।

कलीसिया के लिए समस्याएं

फिलिप्पी की कलीसिया ने कम से कम तीन प्रकार की समस्याओं का सामना किया था- पहली, ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने कलीसिया से बाहर के लोगों से सताव का सामना किया। दूसरी, उन्हें वैसी ही झूठी शिक्षाओं की संभावना का खतरा उठाना पड़ा जैसी दूसरी कलीसियाओं में भी पाई जाती थीं। और तीसरी, उन्होंने कलीसिया में परस्पर मतभेद या कलह से भी संघर्ष किया। पौलुस ने फिलिप्पियों 1:27-30 में इन शब्दों को लिखते हुए उस सताव का उल्लेख किया जिसका वे सामना कर रहे थे :

> एक ही आत्मा में स्थिर हो, और एक चित्त होकर सुसमाचार के विश्वास के लिये परिश्रम करते रहते हो। और किसी बात में विरोधियों से भय नहीं खाते... मसीह के कारण तुम पर यह अनुग्रह हुआ कि न केवल उस पर विश्वास करो पर उसके लिये दुःख भी उठाओ। और तुम्हें वैसा ही परिश्रम करना है, जैसा तुम ने मुझे करते देखा है, और अब भी सुनते हो, कि मैं वैसा ही करता हूँ। (फिलिप्पियों 1:27-30)

कुछ वर्ष पूर्व फिलिप्पी में कलीसिया की स्थापना के ठीक बाद पौलुस ने मकिदुनिया के पड़ोसी नगर थिस्सलुनिके में यहूदियों के बड़े विरोध का सामना किया था। जैसा कि हम प्रेरितों के काम 17:5-13 में पढ़ते हैं, इन क्रोधित यहूदियों ने पौलुस और अन्य विश्वासियों पर रोमी कानून का उल्लंघन करने का आरोप लगाया। फलस्वरूप, पौलुस को यहूदियों द्वारा और अधिक सताव और लोक प्रशासन द्वारा

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

गिरफ्तार किए जाने से बचने के लिए रात में उस नगर से भागना पड़ा। थिस्सलुनिके के ये यहूदी इतने जोश से भरे हुए थे कि उन्होंने बिरिया नगर तक पौलुस का पीछा किया। अत: यह सोचना उचित है कि यही यहूदी, या उनके जैसे दूसरे यहूदियों ने फिलिप्पी की कलीसिया को भी विचलित कर दिया था, और शायद स्थानीय प्रशासन को भी कलीसिया के विरुद्ध भड़का दिया था। परन्तु फिलिप्पी में सताव का सटीक विषय चाहे जो भी हो, कम से कम यह स्पष्ट है कि कलीसिया को अविश्वासियों द्वारा बहुत सताया जा रहा था।

फिलिप्पियों की कलीसिया द्वारा सामना की गई दूसरी समस्या झूठी शिक्षा का खतरा थी। अब ऐसा प्रतीत होता है कि झूठी शिक्षा ने फिलिप्पी की कलीसिया पर अभी तक गहराई से प्रभाव नहीं डाला था, क्योंकि पौलुस ने अभी तक इसका प्रत्यक्ष रूप से खण्डन नहीं किया था। परन्तु उसने फिलिप्पियों को उस प्रत्येक झूठी शिक्षा को ठुकराने के लिए तैयार कर दिया था जो उस नगर में पहुंच सकती थी। फिलिप्पियों 3:1-3 में खतने के विषय में पौलुस के शब्दों पर ध्यान दीजिए :

> वे ही बातें तुम को बार बार लिखने में मुझे तो कोई कष्ट नहीं होता, और इस में तुम्हारी कुशलता है। कुत्तों से चौकस रहो, उन बुरे काम करनेवालों से चौकस रहो, उन काट कूट करनेवालों से चौकस रहो। क्योंकि खतनावाले तो हम ही हैं। **(फिलिप्पियों 3:1-3)**

पौलुस चिंतित था कि जिन झूठे शिक्षकों ने खतने के दुरुपयोगों की वकालत की थी, वे फिलिप्पियों की कलीसिया को परेशान कर सकते थे। उसने फिलिप्पियों 3:18-19 में झूठी शिक्षा की भी निंदा की :

> क्योंकि बहुतेरे... अपनी चालचलन से मसीह के क्रूस के बैरी हैं। उन का अन्त विनाश है, उन का ईश्वर पेट है, वे अपनी लज्जा की बातों पर घमंड करते हैं, और पृथ्वी की वस्तुओं पर मन लगाए रहते हैं। **(फिलिप्पियों 3:18-19)**

पौलुस की भाषा यहां कितनी भी झूठी शिक्षाओं का वर्णन कर सकती हैं, जिसमें खान-पान संबंधी निषेध और पुराने नियम के खान-पान संबंधी नियमों का अनुचित प्रयोग जैसी बातें भी शामिल हो सकती हैं।

अब इस प्रकार की झूठी शिक्षाएं दो प्रकार के स्रोतों से निकली हो सकती है। एक ओर तो पौलुस शायद उन झूठी शिक्षाओं के प्रति चिंतित होगा जिन्होंने कुलुस्से और लिकुस घाटी की कलीसियाओं के लिए खतरा उत्पन्न कर दिया था।

जिस प्रकार हमने पिछले अध्याय में उल्लेख किया था, लिकुस घाटी में फैली इन झूठी शिक्षाओं ने मसीही शिक्षा के साथ यूनानी दर्शनशास्त्र, सन्यासवाद और यहूदी व्यवस्था के भ्रष्ट रूपों को जोड़ दिया था। उदाहरण के तौर पर, पौलुस ने कुलुस्सियों 2:11 और 12 में विशेष रूप से इस झूठी शिक्षा को खतने के अनुचित प्रयोग के साथ, और कुलुस्सियों 2:20-23 में खान-पान संबंधी निषेध के साथ जोड़ा।

दूसरी ओर, वह शायद यरुशलेम के मसीही यहूदियों से चिंतित होगा, उनके विषय में जिनके विरुद्ध पौलुस ने काफी पहले गलातियों 2:11-21 में और हाल ही में रोमियों 4:9-17 में लिखा था। यह संभव है कि उसका सामना उनसे यरुशलेम की उस यात्रा के दौरान हुआ हो जिसके कारण उसे वर्तमान कारावास में डाला गया था। लिकुस घाटी के झूठे शिक्षकों के समान यहूदी मसीहियों ने भी खतना और खान-पान का दुरुपयोग किया और गैरयहूदी विश्वासियों को पुराने नियम की व्यवस्था के पुराने प्रारूपों का पालन करने को बाध्य किया।

अंत में, सताव और झूठी शिक्षा की परेशानियों के अतिरिक्त फिलिप्पियों ने कलीसिया के भीतर ही विरोधों से संघर्ष किया। पौलुस ने फिलिप्पियों 2:1-3 में इस उपदेश के साथ सामान्य शब्दों में इन विरोधों को संबोधित किया :

> सो यदि मसीह में कुछ शान्ति और प्रेम से ढाढ़स और आत्मा की सहभागिता, और कुछ करूणा और दया है। तो मेरा यह आनन्द पूरा करो कि एक मन रहो और एक ही प्रेम, एक ही चित्त, और एक ही मनसा रखो। विरोध या झूठी बड़ाई के लिये कुछ न करो पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो। (फिलिप्पियों 2:1-3)

और फिलिप्पियों 4:2 में उसने इन शब्दों को लिखते हुए उन दो स्त्रियों को उपदेश दिया जो अपने मतभेदों को सुलझा नहीं पा रहीं थीं :

> मैं यूआदिया को भी समझाता हूँ, और सुन्तुखे को भी, कि वे प्रभु में एक मन रहें। (फिलिप्पियों 4:2)

अब फिलिप्पी में आंतरिक विरोध के लिए कठोर अनुशासन की जरुरत नहीं थी। परन्तु फिर भी वे विघटनकारी, निष्फल और पापमय थे। स्वार्थी, प्रेमरहित संघर्ष को कलीसिया में कभी स्वीकार नहीं किया जा सकता। अत: पौलुस ने कलीसिया में एकता और प्रेम पर बल देने में काफी स्थान को समर्पित किया।

अब जब हमने फिलिप्पियों की पृष्ठभूमि पर चर्चा कर ली है, तो हम अपने दूसरे विषय की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं- वह है, फिलिप्पी की कलीसिया को पवित्रशास्त्र में पाई जाने वाली पौलुस की पत्री की संरचना और विषयवस्तु।

संरचना एवं विषयवस्तु

जब हम फिलिप्पियों को लिखी पौलुस की पत्री की संरचना और विषयवस्तु को देखते हैं, तो हम इस पत्री को छ: मुख्य भागों में विभाजित करेंगे- 1:1-2 में अभिवादन; 1:3-8 में आभारप्रदर्शन का भाग; 1:9-11 में फिलिप्पियों के लिए पौलुस की प्रार्थना; 1:12 से 4:20 में पत्री का मुख्य भाग; और 4:21-23 में पौलुस के अंतिम अभिनंदन। आइए, पद 1 और 2 में अभिवादन के साथ आरंभ करें-

अभिवादन

1:1 और 2 में अभिवादन पौलुस को पत्री के प्राथमिक लेखक के रूप में पहचानता है और दर्शाता है कि यह पत्री तीमुथियुस की ओर से भी है। इस पूरी पत्री में पौलुस ने स्वयं को नियमित रूप से एकवचन शब्दों जैसे “हम” की अपेक्षा “मैं” का प्रयोग करते हुए दर्शाया है। और फिलिप्पियों 2:19 और 22 में उसने तीमुथियुस का उल्लेख तीसरे व्यक्ति के रूप में किया।

फिलिप्पियों का अभिवादन पौलुस की अधिकांश अन्य पत्रियों में पाए जाने वाले अभिवादन से अलग है क्योंकि यह पौलुस की प्रेरिताई का उल्लेख नहीं करता। केवल 1 और 2थिस्सलुनिकियों और फिलेमोन में ही यही भिन्नता पाई जाती है। परन्तु पौलुस की ये सभी तीनों अन्य पत्रियां अभिवादनों से बाहर

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पौलुस के प्रैरितिक अधिकार का उल्लेख करती हैं। केवल फिलिप्पियों ही एकमात्र ऐसी पत्री है जिसमें पौलुस कभी स्पष्ट रूप से अपने प्रैरितिक अधिकार का वर्णन नहीं करता है।

अब इसका अर्थ यह नहीं है कि फिलिप्पियों को लिखी पौलुस की पत्री में प्रैरितिक अधिकार की कमी पाई जाती है। बल्कि फिलिप्पियों के साथ उसके संबंध, पौलुस के लिए उनके बड़े आदर, और प्रभु को आनन्दित करने की उनकी उत्सुकता की गवाही है। पौलुस को एक बार भी उन्हें अपने कार्यभार और अधिकार के बारे में स्मरण करवाने की आवश्यकता नहीं पड़ी।

अभिवादन के बाद पौलुस 1:3-8 में आभार-प्रदर्शन के खण्ड की ओर मुड़ता है। अभिवादन से आभार-प्रदर्शन की ओर मुड़ना उसी रीतिनुसार है जिसका अनुसरण पौलुस गलातियों और तीतुस के अतिरिक्त पवित्रशास्त्र में पाई जाने वाली अपनी अन्य पत्रियों में करता है।

आभार-प्रदर्शन

पौलुस के आभार-प्रदर्शन का पहला भाग, जो फिलिप्पियों 1:3-6 में पाया जाता है, धन्यवाद के उच्च स्तरीय कथन को प्रस्तुत करता है और फिलिप्पियों द्वारा पौलुस के जीवन में लाए गए आनन्द और उनके उद्धार की उसकी अपेक्षाओं के बारे में बात करता है।

परन्तु फिलिप्पियों 1:7-8 पौलुस के आभारप्रदर्शन में अपेक्षाकृत रूप से अलग ही पाए जाते हैं जो फिलिप्पियों के लिए पौलुस के प्रेम पर बल देते हैं। वहां पर उसके शब्दों को सुनें :

> उचित है, कि मैं तुम सब के लिये ऐसा ही विचार करूं क्योंकि तुम मेरे मन में आ बसे हो इस में परमेश्वर मेरा गवाह है, कि मैं मसीह यीशु की सी प्रीति करके तुम सब की लालसा करता हूँ। (फिलिप्पियों 1:7-8)

ये पद दर्शाते हैं कि फिलिप्पियों के साथ पौलुस का संबंध बहुत ही व्यक्तिगत और हृदय से जुड़ा हुआ था।

प्रार्थना

अपने आभार-प्रदर्शन के बाद पौलुस ने 1:9-11 में फिलिप्पियों के लिए प्रार्थना की। यह प्रार्थना काफी संक्षिप्त है, परन्तु यह उन कथनों से भरी हुई है जो पूरी पत्री में दिए गए महत्व को प्रदर्शित करती है।

वास्तव में पौलुस ने प्रार्थना की कि फिलिप्पी के विश्वासी उन रूपों में जीवन जीने के द्वारा अपने मसीही प्रेम को प्रदर्शित करें जिनके द्वारा परमेश्वर को सम्मान मिले। पहला, उसने प्रार्थना की कि उनमें सही निर्णय लेने के लिए आवश्यक पहचान-शक्ति हो। दूसरा, उसने प्रार्थना की कि यह पहचान-शक्ति उन्हें अच्छे कार्य करने और न्याय के लिए मसीह के पुन: आगमन तक विश्वास और कार्य में बने रहने में उनकी अगुवाई करे। अंत में, उसने प्रार्थना की कि फिलिप्पी के विश्वासी अपने अच्छे कार्यों और दृढ़ता के माध्यम से परमेश्वर को महिमा और स्तुति प्रदान करे।

अपनी प्रार्थना के बाद पौलुस फिलिप्पियों को लिखी अपनी पत्री के मुख्य भाग की ओर मुड़ा जो 1:12 से 4:20 में पाया जाता है। भिन्न विद्वानों के द्वारा इस भाग की अनेक प्रकार से रूपरेखा प्रदान की गई है। परन्तु इस अध्याय में हमारी रूपरेखा फिलिप्पियों की कलीसिया को पौलुस द्वारा कहे गए उत्साहपूर्ण शब्दों और निर्देशों के तार्किक बहाव का अनुसरण करेगी।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

मुख्य भाग

जब पौलुस ने फिलिप्पियों को लिखा तो वह बहुत कष्ट सह रहा था, और उसका अपना जीवन भी खतरे में था। फलस्वरूप, वह विपत्तियों और चिंता के द्वारा घिरा हुआ था। हम उसका वर्णन निराश होने के रूप में भी कर सकते हैं। और इस दृष्टिकोण से उसने फिलिप्पी के विश्वासियों को पत्री लिखी।

पौलुस जानता था कि ये शायद उसके अंतिम शब्द होंगे। इसलिए उसने उनके लिए अपनी तीव्र भावनाओं को व्यक्त किया और उन्हें यह बताया कि वह उनसे कितना प्यार करता था और वह उनकी मित्रता और सेवकाई के लिए कितना आभारी था। और उसने उनसे बुद्धि के अंतिम शब्द कहे और उन्हें परमेश्वर को सम्मान देने के रूपों में विपदाओं से निपटना सिखाया।

फिलिप्पियों पर इस संपूर्ण दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए हम उसकी पत्री के मुख्य भाग में उसके विचारों के निम्नलिखित क्रम को देख सकते हैं- पहला, 1:12-26 में कारागृह में पौलुस की दृढ़ता; दूसरा, 1:27 से 4:9 में फिलिप्पियों से निरन्तर आगे बढ़ने के उपदेश; और तीसरा, 4:10 से 20 में फिलिप्पियों की दृढ़ता के विषय में पौलुस की पुष्टि। हम 1:12 से 26 में कारागृह में पौलुस की दृढ़ता के साथ आरंभ करने के द्वारा शुरु करके इन भागों पर ध्यान से चर्चा करेंगे।

पौलुस की दृढ़ता

पौलुस कारागृह में अपने कष्टों का इनकार करने या फिर उन्हें अपनाने के द्वारा नहीं परन्तु कष्टों के बीच में आनन्दित रहने के कारणों को पाने के द्वारा दृढ़ बना रहा। और फिलिप्पियों को इस बात में उत्साहित करने को स्पष्ट करने और बचाव करने में समय बिताया। उसने उनकी परवाह की सराहना की परन्तु वह नहीं चाहता था कि वे उसकी परिस्थितियों के कारण व्यथित हो जाएं।

पत्री के इस भाग में उसने अपने उस आनन्द के तीन स्रोतों पर ध्यान दिया जो उसने अपने कष्टों के बीच पाया- पद 12 से 18क में उसकी वर्तमान सेवकाई की सफलता; पद 18ख से 21 में भविष्य के छुटकारे के लिए उसकी आशा; और पद 22 से 26 में भविष्य की सेवकाई के प्रति उसका पूर्वानुमान। पौलुस ने स्पष्ट किया कि अच्छी बातों पर ध्यान देने के द्वारा वह अपनी कठिनाइयों को बेहतर रूप से सहन कर पाया।

उदाहरण के तौर पर, पद 12 से 18क में उसने स्पष्ट किया चाहे वह कारागृह में कष्ट सह रहा था परन्तु वह प्रसन्न था कि उसकी वर्तमान सेवकाई लगातार आगे बढ़ती रही। फिलिप्पियों 1:17-18 में उसके वर्णन को सुनें :

> और कई एक तो सीधाई से नहीं पर विरोध से मसीह की कथा सुनाते हैं, यह समझ कर कि मेरी कैद में मेरे लिये क्लेश उत्पन्न करें। सो क्या हुआ? केवल यह, कि हर प्रकार से चाहे बहाने से, चाहे सच्चाई से, मसीह की कथा सुनाई जाती है, और मैं इस से आनन्दित हूँ। (फिलिप्पियों 1:17-18)

आंशिक रूप से पौलुस ने इसलिए कष्ट सहा क्योंकि द्वेषी प्रचारकों ने उसके लिए मुश्किलें उत्पन्न कर दी थीं। परन्तु चाहे उन्होंने उसे व्यक्तिगत रूप से हानि पहुंचाई, परन्तु वह इस बात से खुश था कि उन्होंने सच्चे सुसमाचार का प्रचार किया था।

पौलुस ने भविष्य के छुटकारे की अपनी आशा में भी आनन्द प्राप्त किया, जिसका वर्णन उसने 18ख से 21 पदों में किया। उसने इस संभावना पर ध्यान दिया कि वह अंत में शायद कारागृह से मुक्त हो जाए। परन्तु जैसा हम कह चुके हैं, इस समय के दौरान पौलुस के कष्ट इतने अधिक थे कि मृत्यु भी एक स्वागतयोग्य राहत होती। और इसलिए उसने इस आशा से उत्साह प्राप्त किया कि वह अपने कष्टों से

छुटकारा पाएगा, या तो अपनी आजादी के द्वारा या मृत्यु के द्वारा। उसने फिलिप्पियों 1:18 से 21 में अपने दृष्टिकोण का वर्णन किया :

> मैं आनन्दित रहूँगा भी। क्योंकि मैं जानता हूँ कि... इस का प्रतिफल मेरा उद्धार होगा... चाहे मैं जीवित रहूँ वा मर जाऊं। क्योंकि मेरे लिये जीवित रहना मसीह है, और मर जाना लाभ है। (फिलिप्पियों 1:18-21)

एक भाव में मृत्यु के खतरे ने पौलुस को बहुत ही व्याकुल कर दिया था। परन्तु दूसरे भाव में, वह मृत्यु से परे उस आनन्द को देख सका जो स्वर्ग में मसीह की उपस्थिति में उसे मिलेगा। और छुटकारे तथा स्वर्ग पर ध्यान देने के द्वारा पौलुस अपनी परेशानियों के मध्य आनन्द को प्राप्त कर सका।

इसी प्रकार फिलिप्पियों 1:22-26 में पौलुस ने आनन्द के स्रोत के रूप में फिलिप्पियों के प्रति अपनी भावी सेवकाई की संभावना देखी। फिलिप्पियों 1:25 और 26 में उसके उत्साहवर्द्धक शब्दों को सुनें :

> मैं जीवित रहूँगा, वरन तुम सब के साथ रहूँगा जिस से तुम विश्वास में दृढ़ होते जाओ और उस में आनन्दित रहो। और जो घमंड तुम मेरे विषय में करते हो, वह मेरे फिर तुम्हारे पास आने से मसीह यीशु में अधिक बढ़ जाए। (फिलिप्पियों 1:25-26)

फिलिप्पी के विश्वासी पौलुस से प्रेम करते थे और उन्होंने इस बात को सुनकर राहत प्राप्त की होगी कि पौलुस के पास अभी भी जीवित रहने की आशा है। और वह भी उनसे प्रेम करता था और उसने मसीह में उनकी खुशहाली के विचार से राहत और संतुष्टि प्राप्त की।

दृढ़ बने रहने के उपदेश

उसके बारे में चिंतित न होने के लिए फिलिप्पियों को उत्साहित करने में कारागृह में अपनी दृढ़ता का प्रयोग करने के बाद पौलुस ने फिलिप्पियों 1:27 से 4:9 में फिलिप्पियों से दृढ़ बने रहने के उपदेशों के लम्बे भाग शामिल किए। यहां पौलुस ने उन्हें मसीह में विश्वासयोग्य रहने और कष्टदायक परिस्थितियों में भी उदाहरणपूर्ण जीवन जीने के लिए निर्देश दिए।

पौलुस के उपदेशों पर हमारे विचार-विमर्श में हम निम्नलिखित चार मुख्य विषयों पर चर्चा करेंगे- 1:27 से 2:18 में दृढ़ता का महत्व; 2:19 से 30 में दृढ़ता के लिए सहायता जो सेवक प्रदान करते हैं; 3:1 से 16 में पौलुस की अपनी दृढ़ता का उदाहरण; और अंत में 3:17 से 4:9 में दृढ़ बने रहने की चुनौतियों के विषय में उसके निर्देश। सबसे पहले आइए देखें कि मसीही विश्वास और क्रिया में दृढ़ता के महत्व के विषय में पौलुस ने क्या कहा।

फिलिप्पियों 1:27-29 में पौलुस ने कठिनाइयों से फिलिप्पियों के संघर्ष को माना और इन शब्दों के साथ उन्हें उत्साहित किया :

> तुम एक ही आत्मा में स्थिर हो, और एक चित्त होकर सुसमाचार के विश्वास के लिये परिश्रम करते रहते हो। और किसी बात में विरोधियों से भय नहीं खाते... क्योंकि मसीह के कारण तुम पर यह अनुग्रह हुआ कि न केवल उस पर विश्वास करो पर उसके लिये दुख भी उठाओ। (फिलिप्पियों 1:27-29)

फिलिप्पियों के कष्ट व्यथित करने वाले और पीड़ादायक थे। परन्तु वे परमेश्वर के नियंत्रण से परे नहीं थे। इसके विपरीत स्वयं परमेश्वर ने आशीष के माध्यमों के रूप में उनके कष्टों की योजना बनाई थी।

और इसलिए यह महत्वपूर्ण था कि वे इन मुश्किल भरे समयों में अपने विश्वास को बनाए रखने के द्वारा और धार्मिक जीवन जीने के द्वारा दृढ़ बने रहें।

जैसे हम अन्य अध्यायों में देख चुके हैं यीशु के कष्टों का कार्य तब तक पूरा नहीं होगा जब तक वह पुन: लौट ना आए। इसी दौरान, वह कलीसिया के माध्यम से अपने नियुक्त कष्टों को पूरा करता है। क्योंकि विश्वासी मसीह के साथ जुड़े हुए होते हैं, इसलिए जब हम कष्ट सहते हैं तो मसीह भी कष्ट सहता है। और पौलुस के दृष्टिकोण से यह मसीह के नियुक्त कष्टों को पूरा करने के माध्यम ही नहीं थे, बल्कि यह सम्मान का बिल्ला भी था।

जैसा हमने अभी फिलिप्पियों 1:27-29 में पढ़ा है, परमेश्वर ने फिलिप्पियों को कष्ट सहने की "अनुमति" ही नहीं दी बल्कि कष्टों में उनकी "अगुवाई" भी की थी। पौलुस ने फिलिप्पियों 2:5-9 में इस विचार को प्रकट किया जहां उसने ये शब्द लिखे :

> जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो... (उसने) मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली। इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान् भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है। (फिलिप्पियों 2:5-9)

यीशु ने अपनी इच्छा से कष्ट और दुर्व्यवहार को कलीसिया के लाभ के लिए सहा और इस बलिदान के लिए उसका पुरस्कार बहुत बड़ा था। इसी प्रकार कलीसिया के लाभ के लिए विश्वासियों को दीनतापूर्वक कष्ट और दुर्व्यवहार सहना चाहिए। और जब हम ऐसा करते हैं तो हमारा पुरस्कार भी बहुत बड़ा होगा। इसीलिए पौलुस फिलिप्पियों 2:17-18 में इन शब्दों को लिख पाया :

> और यदि मुझे तुम्हारे विश्वास के बलिदान और सेवा के साथ अपना लहू भी बहाना पड़े तौभी मैं आनन्दित हूँ, और तुम सब के साथ आनन्द करता हूँ। वैसे ही तुम भी आनन्दित हो, और मेरे साथ आनन्द करो। (फिलिप्पियों 2:17-18)

पौलुस केवल यही नहीं चाहता था कि वे अपने नियुक्त कष्टों को सहें, बल्कि उनसे मिलने वाली आशीषों के कारण कष्टों के मध्य आनन्द करें। इससे बढ़कर वह चाहता था कि वे उन आशीषों में आनन्द करें जो उसके अपने कष्टों से उत्पन्न होंगे, उसी प्रकार जिस प्रकार उसने उन आशीषों में आनन्द उठाया जो उनके कष्टों से उत्पन्न हुई थीं।

पौलुस ने विश्वासियों को कष्ट के पुरस्कारों पर केन्द्रित रहने को उत्साहित किया ताकि वे बड़े दबाव में भी विश्वास और पवित्र जीवन जीने में दृढ़ता हासिल करने के लिए शक्ति और साहस प्राप्त करें। आखिरकार, यदि वे इन्हें सहन न करें तो वे कष्टों से मिलने वाली आशीषों को प्राप्त नहीं करेंगे।

दृढ़ता के महत्व पर बल देने और उन्हें इनकी आशीषों से प्रेरित करने के बाद पौलुस ने उनकी देखरेख करने के लिए सेवकों को भेजने के द्वारा उनके द्वारा सही गई कठिनाइयों के माध्यम से दृढ़ता प्राप्त करने के लिए फिलिप्पियों को व्यावहारिक सहायता प्रदान की।

पौलुस जानता था कि उसकी पत्री फिलिप्पियों को कष्टों का सामना करना सिखाएगी। परन्तु वह यह भी समझ गया था कि कष्टों को सहना तब आसान होता है जब सच्चे लोग दिन-प्रतिदिन के आधार पर हमारी सहायता करने के लिए हों और वे भी हमारे साथ कष्ट सह रहे हों। अत: पौलुस ने दृढ़ निश्चय कर लिया कि अपनी पत्री के साथ वह आवश्यकता के इस समय में फिलिप्पियों के प्रति सेवकाई करने के लिए अपने मित्रों को भेजे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पहले, पौलुस ने इपफ्रुदीतुस को भेजने की योजना बनाई, वह फिलिप्पियों का ही संदेशवाहक था जो पहले पौलुस की सेवा करने के लिए आया था। ऐसा संभव है कि इपफ्रुदीतुस ही वह था जिसने वास्तव में फिलिप्पियों को पौलुस की पत्री पहुंचाई थी। जैसा कि हम फिलिप्पियों 2:25-30 में सीखते हैं फिलिप्पी की कलीसिया इपफ्रुदीतुस के बारे में चिंतित थी क्योंकि वह बीमार हो गया था, और इपफ्रुदीतुस को भी उनकी परवाह थी क्योंकि वे काफी चिंतित थे। अत: पौलुस ने इपफ्रुदीतुस को पुन: उनके पास भेजा ताकि वह उनके मनों को शांति दे और उनके प्रति सेवकाई करे।

फिर, पौलुस ने तीमुथियुस को फिलिप्पी में भेजने की योजना बनाई। कुछ समय के लिए वह कारागृह में पौलुस के साथ रहा और दुःखभरे समय के दौरान उसने प्रेरित के प्रति सेवकाई की। परन्तु जैसा हम फिलिप्पियों 2:19 में देखते हैं पौलुस को आशा थी कि वह शीघ्र ही फिलिप्पियों की सहायता के लिए उसे भेज सके।

अंततः, पौलुस को आशा थी कि वह स्वयं कारागृह से मुक्त हो जाएगा और फिलिप्पियों के प्रति सेवकाई करने के लिए आएगा। उसने इस आशा को फिलिप्पियों 2:24 में व्यक्त किया जहां उसने ये शब्द लिखे :

> और मुझे प्रभु में भरोसा है, कि मैं आप भी शीघ्र आऊंगा। (फिलिप्पियों 2:24)

यूनानी शब्द पेपोइथा, जिसका अनुवाद यहां “आश्वस्त” के रूप में किया गया है, का बेहतर अनुवाद शायद “राजी हुआ” होगा। पौलुस अपनी आजादी के प्रति आशान्वित था परन्तु वह इसके बारे में निश्चित नहीं था।

सारांश में, पौलुस जानता था कि सहानुभूतिपूर्ण मनुष्य फिलिप्पी की कलीसिया के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण होंगे क्योंकि वह कठिनाइयों के बोझ तले संघर्ष कर रही थी। इसलिए उसने ऐसा कार्यक्रम निर्धारित किया जो उन्हें नियमित रूप से दक्ष एवं प्रेमपूर्ण सेवक प्रदान करेगा।

उपदेशों के अगले भाग में, जो फिलिप्पियों 3:1-16 में पाया जाता है, पौलुस ने अपनी विचारधारा और व्यवहार दोनों के विषय में स्वयं को विश्वास में दृढ़ता के सकारात्मक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया।

विशेषकर, पौलुस ने स्पष्ट किया कि जब उसने मसीह में विश्वास किया था तो उसने परमेश्वर के अनुग्रह और आशीष को प्राप्त करने के लिए सांसारिक स्तरों पर निर्भर रहना बंद कर दिया था और पूरी तरह से मसीह पर निर्भर रहना शुरु कर दिया था। परन्तु यह इसलिए नहीं था कि वह सांसारिक स्तरों से सामंजस्य बिठाने में असफल हो गया था। इसके विपरीत सांसारिक स्तरों के द्वारा पौलुस परमेश्वर के सबसे प्रिय लोगों में होना चाहिए था। फिलिप्पियों 3:4-6 में उसकी विशेषताओं के वर्णन को सुनें :

> यदि किसी और को शरीर पर भरोसा रखने का विचार हो, तो मैं उस से भी बढ़कर रख सकता हूँ। आठवें दिन मेरा खतना हुआ, इस्त्राएल के वंश, और बिन्यामीन के गोत्र का हूँ; इब्रानियों का इब्रानी हूँ; व्यवस्था के विषय में यदि कहो तो फरीसी हूँ। उत्साह के विषय में यदि कहो तो कलीसिया का सतानेवाला; और व्यवस्था की धार्मिकता के विषय में यदि कहो तो निर्दोष था। (फिलिप्पियों 3:4-6)

यदि कोई आम मनुष्य व्यवस्था का पालन करने के द्वारा परमेश्वर की आशीषों को प्राप्त कर पाता, तो वह पौलुस था।

परन्तु सच्चाई यह है कि कोई भी पतित मनुष्य परमेश्वर के उद्धार और अनन्त जीवन की आशीषों को प्राप्त करने के लिए पर्याप्त रूप से भला नहीं हो सकता। और इसलिए पौलुस ने दुनियावी योग्यताओं पर

निर्भर होने का इनकार कर दिया और केवल मसीह की योग्यताओं पर निर्भर रहा जो परमेश्वर ने उसे विश्वास के माध्यम से प्रदान की।

इसके साथ-साथ उसने यह भी स्पष्ट किया कि विश्वास का मुंह से अंगीकार करना ही हमारे उद्धार के लिए पर्याप्त नहीं है। इसके विपरीत हमें अनन्त जीवन को प्राप्त करने के लिए विश्वास में दृढ़ बने रहना आवश्यक है। हमें अपना विश्वास बनाए रखना आवश्यक है, और हमें पवित्र जीवन जीना भी आवश्यक है, नहीं तो हम अपने विश्वास को झूठा साबित करेंगे।

इसीलिए उसने फिलिप्पियों 3:12-16 में मसीह में उद्धार के बारे में इन शब्दों को लिखते हुए दृढ़ता पर काफी बल दिया :

> यह मतलब नहीं, कि मैं पा चुका हूँ, या सिद्ध हो चुका हूँ: पर उस पदार्थ को पकड़ने के लिये दौड़ा चला जाता हूँ, जिस के लिये मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा था... (मैं) निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूँ, ताकि वह इनाम पाऊं, जिस के लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है... सो जहां तक हम पहुंचे हैं, उसी के अनुसार चलें। **(फिलिप्पियों 3:12-16)**

विश्वास को मुंह से अंगीकार करना ही पर्याप्त नहीं है; हमें दृढ़ बने रहने के द्वारा अपने विश्वास को प्रमाणित करना है। और यदि हम अपने उद्धार के लिए मसीह के विश्वास में और भक्तिपूर्ण जीवन में उसके प्रति विश्वासयोग्यता में दृढ़ता से अंत तक बने न रहें तो हम अपने विश्वास को झूठा प्रमाणित करेंगे।

पौलुस के अंतिम उपदेश दृढ़ता की चुनौतियों के विषय में थे जिसको उसने फिलिप्पियों 3:17 से 4:9 में संबोधित किया। ये उपदेश प्रमुख रूप से उसके उपदेश के प्रयोग हैं कि फिलिप्पी के विश्वासी उसकी दृढ़ता के उदाहरण का अनुसरण करें।

दृढ़ता की चुनौतियों को संबोधित करने में पौलुस ने फिलिप्पियों को उत्साहित किया कि वे परमेश्वर के प्रति अपनी विश्वासयोग्यता में ठोकर खाने में न तो झूठे शिक्षकों को, न ही कलीसिया में कोई मतभेद को, और न ही व्यक्तिगत कठिनाइयों को अनुमति दें। और उसने उन मार्गों पर ध्यान देने के द्वारा आरंभ किया जिनके द्वारा झूठे शिक्षक कलीसिया पर हमला कर सकते हैं और इसकी दृढ़ता के लिए खतरा बन सकते हैं। फिलिप्पियों 3:18 और 19 को सुनें जहां उसने इस कठोर निन्दा को लिखा :

> क्योंकि बहुतेरे... अपनी चालचलन से मसीह के क्रूस के बैरी हैं। उन का अन्त विनाश है, उन का ईश्वर पेट है, वे अपनी लज्जा की बातों पर घमंड करते हैं, और पृथ्वी की वस्तुओं पर मन लगाए रहते हैं। **(फिलिप्पियों 3:18-19)**

स्पष्टत: मसीह के क्रूस के शत्रु विश्वासी नहीं थे। परन्तु फिर भी वे ऐसी स्थिति में थे कि वे कलीसिया के लिए खतरा बनें, शायद इसलिए कि उन्होंने फुसलाने के शब्दों में बात की या इसलिए कि वे कलीसिया में प्रभावशाली थे।

जैसे भी हो, पौलुस ने बल दिया कि मसीही सच्चे मसीही विश्वास और क्रिया में दृढ़ रहते हुए मसीह के शत्रुओं की झूठी शिक्षाओं को त्याग दें। मुश्किलों और कष्टों से दूर रहने की चाहत सुसमाचार में विश्वास को खोने का पर्याप्त कारण नहीं था; और फुसलाने वाले तर्क प्रभु की शक्ति का स्थान नहीं ले सकते थे।

परन्तु पौलुस ने यह चेतावनी भी दी कि कलीसिया के सच्चे विश्वासी भी अन्य विश्वासियों के समक्ष दृढ़ता की चुनौतियों को प्रस्तुत कर सकते हैं। इसके उदाहरण के रूप में उसने यूआदिया और सुन्तुखे के बीच में पाई जाने वाली समस्या का उल्लेख किया। फिलिप्पियों 4:1-3 में उसके शब्दों को सुनें :

> इसलिये... प्रभु में इसी प्रकार स्थिर रहो। मैं यूआदिया को भी समझाता हूँ, और सुन्तुखे को भी, कि वे प्रभु में एक मन रहें। और हे सच्चे सहकर्मी... कि तू उन स्त्रियों की सहयता कर, क्योंकि उन्होंने मेरे साथ सुसमाचार फैलाने में. . . परिश्रम किया है। (फिलिप्पियों 4:1-3)

इस विरोध के द्वारा यूआदिया और सुन्तुखे पवित्र जीवन जीने में मजबूती से खड़े होने में असफल हो रही थीं, और अपने प्रभाव के कारण उन्होंने फिलिप्पी के अन्य विश्वासियों की दृढ़ता को भी खतरे में डाल दिया था।

और अंत में पौलुस ने फिलिप्पियों को उपदेश दिया कि वे व्यक्तिगत कठिनाइयों को अनुमति देकर अपनी दृढ़ता में रुकावट पैदा न करें. उसने उन्हें इस बात से भी उत्साहित किया कि वे आनन्दपूर्ण दृष्टिकोण रखें और व्याकुलता को अनुमति न दे ताकि वे निरुत्साहित न हों। फिलिप्पियों 4:4-7 में पाए जाने वाले इन शब्दों में उसके विचारों को अच्छी तरह से प्रस्तुत किया गया है :

> प्रभु में सदैव आनन्दित रहो; मैं पुनः कहता हूँ कि आनन्दित रहो। किसी बात की चिन्ता न करो, परन्तु प्रत्येक बात में... तुम्हारी विनतियां परमेश्वर के समक्ष प्रस्तुत की जाएं। तब परमेश्वर की शान्ति... मसीह यीशु में तुम्हारे हृदयों और विचारों की रक्षा करेगी। (फिलिप्पियों 4:4-7)

पौलुस का व्यावहारिक निर्देश यह था कि विश्वासियों को परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह उन्हें अपनी चिंताओं से मुक्त करे। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि अधिकांश विषयों में पौलुस की अपेक्षा थी कि परिवर्तन दिल और मन का, स्वभाव और दृष्टिकोण का हो।

दृढ़ता की पुष्टि

अंत में, 4:10 से 20 में, पौलुस ने फिलिप्पियों की विश्वास और मसीही जीवन में दृढ़ता के शब्दों के द्वारा, विशेषकर पौलुस के प्रति उनकी सुचारु सेवकाई के माध्यम से, पुष्टि करते हुए इस पत्री को समाप्त किया।

इस खण्ड में पौलुस ने फिलिप्पियों को उस धन के लिए धन्यवाद दिया जो उन्होंने कारागृह में उसके कष्टों से राहत पहुंचाने के लिए भेजा था। पौलुस की आभार-पत्री ने उन्हें आश्वस्त कर दिया था कि उसे धन प्राप्त हो गया था और इससे उसकी परिस्थितियों में सुधार हुआ था। परन्तु पौलुस के लिए धन का सबसे अधिक प्रभाव भावनात्मक प्रतीत होता है। फिलिप्पियों 4:12-14 में उसके शब्दों को सुनें :

> मैंने हर बात में और प्रत्येक परिस्थिति में, चाहे तृप्त होने या भूखा रहने, चाहे प्रचुरता में या अभाव में, सन्तुष्ट रहने का रहस्य सीख लिया है,... फिर भी मेरी विपत्ति में मेरा साथ देकर तुमने अच्छा कार्य किया है। (फिलिप्पियों 4:12-14)

धन ने शायद उसके कुछ कष्टों को कम कर दिया था, परन्तु उसे संतोष परमेश्वर की ओर से ही मिला। इस धन का सबसे अधिक महत्व यह था कि इसने पौलुस के हृदय को स्पर्श कर लिया था। अपने लिए उनके बलिदान के माध्यम से इन निर्धन मसीहियों ने पौलुस को अहसास करवा दिया था कि वे पौलुस से कितना सच्चा प्रेम करते थे।

फिलिप्पियों द्वारा पौलुस के लिए अपने प्रेम को प्रदर्शित करने का इससे बेहतर समय नहीं हो सकता था। इस समय पर पौलुस का कारवास उस पर बहुत बड़ा बोझ बना हुआ था। वह कष्टों को सह रहा था और हताश था। कल्पना कीजिए कि इस बात को स्मरण करना कितना सुखद रहा होगा कि बहुत से लोग उससे प्रेम करते थे उसके कष्टों में सहभागी होना चाहते थे।

यह भी सोचा जा सकता है कि फिलिप्पियों ने ही निराशा पर विजय पाने में पौलुस की सहायता की थी। क्या यह उनकी परवाह थी जिसने पौलुस को पुनस्थापित कर दिया था? क्या यह उनका प्यार था जिसने उसकी भयानक परिस्थितियों के मध्य आनन्दित होने के उसके निर्णय को प्रेरित किया था? क्या यह उनकी मित्रता थी जिसने पौलुस को स्मरण करवाया कि न तो उसे भूला गया था और न ही वह अकेला था? एक बात तो निश्चित है- पौलुस ने अपने पूरे दिल से फिलिप्पियों से प्रेम किया था। अत: उनके उपहार ने उसे उत्साहित किया।

अंतिम अभिनंदन

अंत में, यह पत्री फिलिप्पियों 4:21-23 में पौलुस के अंतिम अभिनंदनों के साथ समाप्त होती है। यह खण्ड काफी स्तरीय है, यद्यपि इन अंतिम अभिनंदनों का पहलू विशेष टिप्पणी प्रदान किए जाने के योग्य है।

विशेषकर, फिलिप्पियों 4:22 में पौलुस ने उन संतों की ओर से अभिनंदनों को भेजा जो कैसर के घराने से थे। प्राचीन जगत में कैसर के घराने में उसके परिवार के सदस्य और नौकर शामिल होते थे, चाहे वे उसके साथ महल में रहते हों या नहीं। और उसके नौकर मजदूरों तक ही सीमित नहीं थे; उनमें उसके व्यक्तिगत अंगरक्षक और लोक-सेवक भी शामिल थे।

अब कैसर के घराने के उल्लेख ने अनेक बाइबल व्याख्याताओं को यह निष्कर्ष निकालने को प्रेरित किया है कि पौलुस ने यह पत्री रोम से लिखी थी जहां कैसर रहता था और अपने घराने को संचालित करता था। परन्तु हमें जल्दबाजी में यह निर्णय नहीं लेना चाहिए। सच्चाई यह है कि कैसर के साम्राज्य के सभी लोक-सेवकों और रक्षकों को उसके घराने के भाग कहा जाता था, इनमें वे लोग भी शामिल थे जो कैसरिया मरितिमा में रहते थे।

चाहे जैसा भी हो कैसर के घराने के विश्वासियों का उल्लेख दर्शाता है कि पौलुस के कारावास ने उसके सुसमाचार की सेवकाई में बाधा उत्पन्न नहीं की थी। इसके विपरीत पौलुस ने चेले बनाना जारी रखा, अपने दरोगाओं में से भी।

फिलिप्पियों को लिखी पौलुस की पत्री की पृष्ठभूमि, और इसकी संरचना और विषयवस्तु की जांच करने के बाद अब हम इस पत्री में पौलुस की शिक्षाओं के आधुनिक प्रयोग पर चर्चा करने की स्थिति में हैं।

आधुनिक प्रयोग

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि फिलिप्पियों की पत्री को कई रूपों में हमारे आधुनिक जीवनों पर लागू किया जा सकता है। परन्तु इस अध्याय में हमने दूसरों को उत्साहित करने में पौलुस के उस समय के प्रयास पर ध्यान दिया है जब उसने ऐसे समय का सामना किया जो शायद उसका अंतिम दिन हो सकता था। इस दृष्टिकोण से एक विषय सामने आता है- फिलिप्पियों को दृढ़ बने रहने और परमेश्वर के समक्ष विश्वासयोग्यता के साथ चलने के लिए पौलुस द्वारा दिया गया उत्साह। जब हम इस बात पर चर्चा करते हैं कि फिलिप्पियों का आज हमारे लिए क्या अर्थ है, तो हम उसकी पत्री के इस पहलू पर ध्यान देंगे।

जब हम आधुनिक मसीही जीवन के लिए फिलिप्पियों को लिखी पौलुस की पत्री के निहितार्थों के बारे में सोचते हैं तो हम मसीही दृढ़ता के तीन पहलुओं की जांच करेंगे। पहला, हम दृढ़ता की प्रकृति को

संबोधित करेंगे। दूसरा, हम दृढ़ता की विचारधारा पर चर्चा करेंगे। और तीसरा, दृढ़ता की कलीसियाई सेवकाई पर चर्चा करेंगे। आइए पहले हम दृढ़ता की प्रकृति की ओर मुड़ें।

दृढ़ता की प्रकृति

फिलिप्पियों में दृढ़ता पर पौलुस की शिक्षा को तीन तथ्यों के द्वारा सबसे सरल रूप से समझा जा सकता है- दृढ़ता की परिभाषा; दृढ़ता की आवश्यकता; और दृढ़ता का आश्वासन। इसलिए आइए पौलुस द्वारा दी गई दृढ़ता की परिभाषा को देखने के द्वारा आरंभ करें।

परिभाषा

पौलुस ने दृढ़ता को सच्चे विश्वास और धार्मिक जीवन के द्विरूपीय विचारों के साथ समझा। एक ओर तो दृढ़ता मसीह के सुसमाचार में हमारे विश्वास को बनाए रखना और परमेश्वर के समक्ष हमारे धार्मिक स्तर के लिए केवल परमेश्वर की योग्यताओं पर निर्भर रहना है। पौलुस ने इस विषय में फिलिप्पियों 1:27 में लिखा, जहां उसने इन शब्दों के साथ फिलिप्पियों के लिए अपनी आशा को व्यक्त किया :

> एक मन के साथ सुसमाचार के विश्वास के लिए एक साथ संघर्ष करते हुए एक आत्मा में स्थिर हो। (फिलिप्पियों 1:27)

विश्वासियों के रूप में हमें अपनी धारणाओं के विषय में कभी हार न मानते हुए सुसमाचार के प्रति अपने समर्पण में स्थिर रहना आवश्यक है। जब हम विश्वास में दृढ़ बने रहने की बात करते हैं तो उससे हमारा यही अर्थ होता है।

मसीह के सुसमाचार में सच्चे विश्वास को कई रूपों में वर्णित किया जा सकता है, परन्तु मसीही विश्वास के उस मुख्य केन्द्र को सुनें जिसका वर्णन पौलुस ने फिलिप्पियों 3:8-9 में किया :

> मैंने सब वस्तुओं को खो दिया और उन्हें कूड़ा-करकट मानता हूँ, ताकि मैं मसीह को प्राप्त करूं, और उसी में पाया जाऊँ; व्यवस्था-पालन से प्राप्त होने वाली अपनी धार्मिकता के कारण नहीं परन्तु मसीह पर विश्वास करने से प्राप्त होने वाली धार्मिकता से, अर्थात् वह धार्मिकता जो विश्वास के आधार पर परमेश्वर से प्राप्त होती है। (फिलिप्पियों 3:8-9)

इस अनुच्छेद में पौलुस ने दर्शाया कि सच्ची धार्मिकता और उद्धार पाने के लिए उसकी सारी मानवीय प्रतिष्ठा और भले कार्य व्यर्थ थे। एक ही बात जो उसे उद्धार प्रदान कर सकती थी वह थी मसीह की धार्मिकता जो विश्वास के द्वारा पौलुस पर लागू होती है।

जब तक हम अपनी धार्मिकता के लिए पूरी तरह से मसीह की योग्यताओं पर निर्भर रहते हैं, हम दृढ़ बने रहते और अपने विश्वास में स्थिर खड़े रहते हैं। अब कहने का अर्थ यह नहीं है कि दृढ़ता कभी संदेहों के सामने नहीं झुकती। बल्कि, बात यह है कि दृढ़ विश्वास सुसमाचार के सत्य को पूरी तरह से कभी नहीं नकारता। इससे बढ़कर सच्चे विश्वास को रखने का अर्थ यह नहीं है कि हमारे पास सिद्ध धर्मविज्ञान है। हमारे धर्मविज्ञान में अनेक त्रुटियां होने के बावजूद भी हम सुसमाचार के आधारभूत सिद्धांतों के प्रति विश्वासयोग्य रह सकते हैं। परन्तु जब हम इस केन्द्रीय सत्य पर विश्वास नहीं करते कि हम केवल मसीह और मसीह के द्वारा ही उद्धार पाते हैं, तो हम दृढ़ बने रहने में सचमुच असफल हो जाते हैं।

सच्चे विश्वास के रूप में दृढ़ता को परिभाषित करने के अतिरिक्त पौलुस ने दृढ़ता को भले और प्रशंसनीय कार्य करते हुए धार्मिक जीवन जीने के रूप में भी दर्शाया। उदाहरण के तौर पर उसने फिलिप्पियों 2:12 और 13 में इस प्रकार से कहा :

> अत: हे मेरे प्रियो, जिस प्रकार तुमने सदैव आज्ञा का पालन किया है... डरते और थरथराते हुए अपने उद्धार का कार्य पूरा करो। क्योंकि केवल परमेश्वर ही है जो अपने अच्छे उद्देश्य के लिए तुम्हारे भीतर इच्छा जागृत करने और तुम से कार्य करवाने के लिए सक्रिय है। (फिलिप्पियों 2:12-13)

यहां पौलुस ने उद्धार के अनुसार कार्य करते हुए भले कार्यों में जारी रहने के विषय में बात की। अब भले कार्यों में दृढ़ बने रहने का अर्थ यह नहीं है कि हम सिद्ध जीवन बिताते हैं। हम इस जीवन में कभी सिद्धता को प्राप्त नहीं कर सकते, और कभी-कभी हमें गंभीर रूप में ठोकर भी लग जाती है। बल्कि, जब हम विश्वासयोग्यता से मसीह की आज्ञा मानने का प्रयास करते हैं तो हम भले कार्यों में दृढ़ हो सकते हैं।

आवश्यकता

अब पौलुस यह नहीं चाहता था कि विश्वासी केवल दृढ़ता की परिभाषा ही जाने; वह यह भी चाहता था कि हम उद्धार को प्राप्त करने के लिए विश्वास और जीवन में दृढ़ता की आवश्यकता को समझ लें ताकि हम दृढ़ता के लिए वास्तव में प्रेरित हो जाएं। फिलिप्पियों 3:8-11 में पौलुस के शब्दों को सुनें :

> मैंने सब वस्तुओं को खो दिया और उन्हें कूड़ा-करकट मानता हूँ, ताकि मैं मसीह को प्राप्त करुं, और उसी में पाया जाऊँ; व्यवस्था-पालन से प्राप्त होने वाली अपनी धार्मिकता के कारण नहीं परन्तु मसीह पर विश्वास करने से प्राप्त होने वाली धार्मिकता से... कि मैं भी किसी तरह मृतकों में से पुनरुत्थान प्राप्त करुँ। (फिलिप्पियों 3:8-11)

सरल भाषा में कहें तो पौलुस ने सिखाया था कि यदि हम सच्चे विश्वास को बनाए रखने में असफल हो जाते हैं तो हम मसीह में नहीं पाए जाएंगे जिससे हम अनन्त महिमा के जीवन के लिए पुन: जी भी नहीं उठेंगे। दूसरे शब्दों में, हमारें संपूर्ण उद्धार के लिए विश्वास में दृढ़ता आवश्यक है।

इसी प्रकार फिलिप्पियों 2:14-16 में उसने धार्मिक जीवन के विषय में यह उपदेश दिया :

> सब कार्य बिना कुड़कुड़ाए और बिना किसी विवाद के किया करो। ताकि तुम निर्दोष और निर्मल बनो, और इस कुटिल और भ्रष्ट लोगों में परमेश्वर की निष्कलंक सन्तान बनकर संसार के मध्य सितारों के समान चमको... ताकि मसीह के दिन मैं इस बात पर गर्व कर सकूँ कि मेरी दौड़-धूप और मेरा परिश्रम व्यर्थ नहीं गया। (फिलिप्पियों 2:14-16)

शिकायत और वादविवाद से दूर रहने, अर्थात् धार्मिक रूप से जीवन जीने के द्वारा फिलिप्पी के विश्वासी निष्कलंक और शुद्ध बन सकते थे और जिससे पौलुस को अपनी सेवकाई पर गर्व करने का कारण मिल सकता था। परन्तु यदि वे दृढ़ रहने में असफल हो जाते तो वे इस बात को दर्शाते कि वे परमेश्वर की संतान नहीं थे- कि उन्होंने सच्चाई से मसीह पर विश्वास नहीं किया था- और कि वे अंतिम दिन को बचाए नहीं जाएंगे। और यह हम पर भी लागू होता है- यदि हम धार्मिक जीवन में दृढ़ नहीं बने रहते हैं तो हम स्वयं को अविश्वासी सिद्ध करते हैं और जिससे हम उद्धार प्राप्त नहीं करेंगे।

हम में से अनेकों के लिए दृढ़ता की परिभाषा और आवश्यकता पर पौलुस की शिक्षा भयभीत कर देने वाली या कठोर प्रतीत हो सकती है। परन्तु पौलुस की धर्मशिक्षा का तीसरा पहलू भी है जो काफी

उत्साहवर्द्धक है, अर्थात् दृढ़ता का आश्वासन। और आश्वासन के प्रकाश में दृढ़ता पर पौलुस की शिक्षा विश्वासियों के लिए खतरा नहीं बल्कि राहत है।

आश्वासन

पौलुस ने फिलिप्पियों को आश्वस्त किया था कि प्रत्येक सच्चा विश्वासी निश्चित रूप से विश्वास और धार्मिक जीवन में दृढ़ बना रहेगा जिससे हमारा उद्धार निश्चित हो जाता है। यह आज भी सत्य है कि बहुत से लोग झूठमूठ का विश्वास रखते हैं और वास्तव में दृढ़ बने रहने में असफल हो जाते हैं। परन्तु ये वे लोग हैं जिनमें उद्धार प्रदान करने वाला विश्वास कभी था ही नहीं। दूसरी ओर, वे जिनका विश्वास सच्चा होता है, पवित्र आत्मा को प्राप्त करते हैं जो उनके अंदर दृढ़ता को निश्चित करने के लिए कार्य करता है। फिलिप्पियों 1:6 में पौलुस के शब्दों को सुनें :

> मुझे पूर्ण निश्चय है कि जिसने तुम में अच्छा कार्य आरम्भ किया है वह उसे मसीह यीशु के दिन तक पूरा भी करेगा। (फिलिप्पियों 1:6)

पौलुस इस बात से आश्वस्त था कि यदि परमेश्वर ने फिलिप्पियों को उद्धार देना आरंभ कर दिया है, तो वह फिलिप्पियों को उद्धार देने का कार्य पूर्ण भी करेगा। वह उनमें से किसी को भी नाश होने नहीं देगा, बल्कि मसीह यीशु के दिन तक सभी सच्चे विश्वासियों को दृढ़ बने रहने के लिए प्रेरित करेगा। और पौलुस का भरोसा हमारा भरोसा भी होना चाहिए। यदि हम सचमुच विश्वास करते हैं, तो ऐसा नहीं हो सकता कि हम विश्वास या अनुग्रह से गिर जाएं। पौलुस ने फिलिप्पियों 2:13 में इस विचार की पुष्टि की जहां उसने उत्साह के ये शब्द लिखे :

> डरते और थरथराते हुए अपने उद्धार का कार्य पूरा करो। क्योंकि केवल परमेश्वर ही है जो अपने अच्छे उद्देश्य के लिए तुम्हारे भीतर इच्छा जागृत करने और तुम से कार्य करवाने के लिए सक्रिय है। (फिलिप्पियों 2:12-13)

जो भय हमारे अंदर होना चाहिए वह यह खौफ नहीं है कि हम अंत में अनुग्रह से गिर जाएंगे, बल्कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर के इस अनुभव का द्रवित कर देने वाला भय कि वह इस बात को निश्चित करने के लिए हम में से प्रत्येक के भीतर कार्य कर रहा है कि हम वही सोचें और करें जो वह चाहता है। वह अच्छे उद्देश्य के लिए हमारे हृदयों और मनों को नियंत्रित करता है, जिसमें हमारी दृढ़ता भी शामिल होती है, ताकि हम अंत तक स्थिर खड़े रहने में किसी भी तरह से असफल न हो जाएं।

दृढ़ता की विचारधारा

अब जब हमने दृढ़ता की प्रकृति की जांच कर ली है तो अब हम इस स्थिति में हैं कि दृढ़ता की उस विचारधारा पर चर्चा करने के लिए तैयार हैं जो विश्वासियों को अपनानी चाहिए। हमारी चर्चा में हम अपनी विचारधारा के तीन पहलुओं पर चर्चा करेंगे जिन पर पौलुस ने फिलिप्पियों को लिखी पत्री पर बल दिया- नम्रता, आशावाद और आनन्द। आइए पहले पौलुस के इस विचार पर बल दें कि हमारी विचारधारा नम्रता पर आधारित होनी चाहिए।

नम्रता

प्रभु यीशु मसीह के आधिकारिक प्रेरित होने के रूप में पौलुस के पास घमण्डी होने के बहुत से अवसर थे। परमेश्वर ने पौलुस को अगुवा बनने के लिए प्रशिक्षित किया था; सबसे बढ़कर उसने पौलुस को गैरयहूदियों के बीच सुसमाचार का प्रचार करने के लिए चुना था; और उसने पौलुस के द्वारा कई

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

चमत्कार भी किए थे। संसार भर की कई कलीसियाओं में पौलुस को एक नायक के रूप में सम्मान दिया जाता था।

इसलिए जब वह कारागृह में कष्ट सह रहा था तो वह इस बात को सोचने को लालायित हो सकता था "सब लोगों में से परमेश्वर ने मेरे साथ ही ऐसा होने की अनुमति क्यों दी है? मैं उसके प्रति विश्वासयोग्य रहा हूँ, पर फिर भी वह मुझे आशीष नहीं देता! मैं इससे बेहतर प्राप्त करने के योग्य हूँ!" परन्तु परमेश्वर की भलाई को चुनौती देना मूर्खतापूर्ण और गलत है। परन्तु पौलुस जानता था कि वास्तव में उसके पास परमेश्वर के समक्ष नम्र बने रहने के बहुत से कारण थे। और इस सच्चाई को स्वीकार करने के द्वारा उसने परमेश्वर द्वारा बनाए जाने और अपने द्वारा सही गई कठिनाइयों के माध्यम से दृढ़ बने रहने के लिए स्वयं को तैयार किया।

इस विषय में पौलुस ने अपनी विचारधारा को यीशु की विचारधारा के समान बना दिया, जिसने अपने और हमारे लिए परमेश्वर की आशीष को प्राप्त करने के लिए स्वयं को अपनी इच्छा से नम्र कर दिया। वास्तव में, यह नम्र बनने के उसके उपदेशों के समर्थन में ही था कि पौलुस ने प्रसिद्ध "मसीह भजन" को शामिल किया जो फिलिप्पियों 2:6-11 में पाया जाता है।

कुछ विद्वानों ने सुझाव दिया है कि ये पद एक भजन की रचना करते हैं जो पौलुस द्वारा फिलिप्पियों की पत्री के लिखे जाने से पूर्व भी कलीसिया में पाया जाता था। अन्य संदेह करते हैं कि पौलुस ने ये पद इसी अवसर के लिए लिखे थे। परन्तु उनका स्रोत चाहे जो भी हो, इन पदों का अर्थ स्पष्ट है- यीशु नम्र या दीन है, और हमें उसी के समान बनना है।

यह अनुच्छेद मसीह को इतिहास के तीन चरणों के दौरान दर्शाता है- देहधारण से पूर्व की अवस्था, उसकी नम्रता और महिमा में उसका उत्थान। पहला, पौलुस ने देहधारण से पूर्व मसीह की स्थिति के बारे में बात की। उस समय मसीह पुत्र-परमेश्वर के रूप में अस्तित्व में था, और पिता एवं पवित्र आत्मा के साथ सिद्ध संयोजन में रहता था और सामर्थ एवं महिमा में उनके समान था। पौलुस ने फिलिप्पियों 2:6 में मसीह के देहधारण से पूर्व की अवस्था का वर्णन किया है जहां उसने ये शब्द लिखे :

> **(मसीह ने) परमेश्वर के स्वरूप में होते हुए भी परमेश्वर की समानता पर अपना अधिकार बनाए रखना उपयुक्त न समझा। (फिलिप्पियों 2:6)**

यह पद हमें मसीह के बारे में कम से कम दो बातें बताता है। पहली, मनुष्य बनने से पहले मसीह महिमावान था। या जैसा कि पौलुस लिखता है, मसीह में परमेश्वर का स्वभाव था। पौलुस द्वारा प्रयोग किया गया यूनानी शब्द मोरफे है जो समान्यत: किसी के बाहरी आकार को दर्शाता है। अब, निःसंदेह, पौलुस का अर्थ केवल यह नहीं था कि मसीह परमेश्वर के समान दिखता था। बल्कि, यह कि उसकी बाहरी दिखावट इस अंतर्निहित वास्तविकता को प्रकट करती थी कि मसीह वास्तव में परमेश्वर था।

दूसरी, पौलुस ने दर्शाया कि मसीह नम्र था। अपनी नम्रता को दर्शाने से पूर्व ही पहले से अस्तित्व में रहने वाले पुत्र ने एक अतिरिक्त स्वभाव या रूप, अर्थात् हमारे मनुष्यत्व के रूप को लेने में अपनी इच्छा के द्वारा इसे प्रकट किया। विशेषकर, पौलुस ने लिखा कि मसीह ने परमेश्वर की समानता पर अपना अधिकार बनाए रखना उपयुक्त न समझा। यहां पौलुस ने इसोस शब्द का प्रयोग परमेश्वर के साथ मसीह की "समकक्षता" या "समानता" को दर्शाने के लिए किया। उसका अर्थ था कि मसीह का "रूप" या "बाहरी महिमा" वही महिमा थी जो पिता-परमेश्वर के द्वारा प्रदर्शित की जाती थी, परन्तु मसीह पिता को प्रसन्न करने के लिए और हमारे उद्धार को मोल लेने के लिए अपनी अधिकारपूर्ण स्वर्गीय दशा की महिमा को त्याग देने के लिए तैयार था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अगला, पौलुस ने मरियम के गर्भ में मसीह के गर्भधारण से लेकर क्रूस पर उसकी मृत्यु तक उसकी नम्रता या दीनता का वर्णन किया जो उसके पृथ्वी पर बिताए गए जीवन का समय था। फिलिप्पियों 2:7-8 में मसीह की नम्रता के विषय में पौलुस के शब्दों को सुनें :

> (मसीह ने) स्वयं को रिक्त कर दिया और एक दास का स्वरूप ग्रहण करके मनुष्य की समानता में हो गया। और जब वह मनुष्य के रूप में प्रकट हुआ, तो उसने स्वयं को नम्र किया और मृत्यु तक आज्ञाकारी रहा, यहां तक कि क्रूस की मृत्यु तक। (फिलिप्पियों 2:7-8)

देहधारण से पूर्व मसीह के विषय में पौलुस के शब्दों को दर्शाते हुए ये पद नम्रता की उसकी अवस्था के दौरान मसीह के विषय में कम से कम दो बातें बताते हैं। पहली, मसीह की नम्रता लज्जास्पद थी। अर्थात् परमेश्वर के पुत्र ने मनुष्य के स्वभाव या रूप को ग्रहण करने के लिए अपनी स्वर्गीय महिमा को अलग रख दिया। फिर पौलुस ने यूनानी शब्द मोरफे का इस्तेमाल यह दर्शाने के लिए किया कि मसीह ने अपने बाहरी रूप को बदल दिया, जिससे उसने स्वर्गीय महिमा को प्रदर्शित नहीं किया बल्कि मनुष्य के बाहरी रूप को प्रदर्शित किया।

अब जिस प्रकार मसीह के स्वर्गीय रूप ने दर्शाया था कि वह सच्चे एवं पूर्ण रूप से दैवीय था, तो उसके मानवीय रूप ने दर्शाया कि वह सच्चे एवं पूर्ण रूप से मानव था। परन्तु यह अनुभव करना भी महत्वपूर्ण है कि मनुष्य बनने में मसीह ने अपने किसी भी स्वर्गीय चरित्र को नहीं त्यागा। बल्कि उसने अपने पूर्ण दैवीय स्वभाव में पूर्ण मानवीय स्वभाव जोड़ दिया, इसीलिए उसे सही रूप में पूर्ण मानवीय और पूर्ण दैवीय कहा जाता है।

दूसरी, फिलिप्पियों 2:7-8 इस बात की पुष्टि करता है कि मसीह दीन था। जिस प्रकार वह देहधारण से पूर्व की अवस्था में अपने महिमामय रूप को अलग रखने के लिए तैयार था, उसी प्रकार उसने इस रूप को वास्तव में अपने दीन होने के समय के दौरान ही अलग रखा। वास्तव में, उसकी दीनता इतनी अधिक थी कि उसने साधारण प्राणियों को अपनी हत्या करने की अनुमति दे डाली जिनके आकार को उसने अपने लिए ले लिया था।

अंत में, पौलुस ने मसीह का वर्णन उसको महिमान्वित किए जाने के समय के दौरान किया, जो मृतकों में से उसके पुनरुत्थान और स्वर्ग में उसके स्वर्गारोहण से शुरु हुआ और अब सृष्टि पर उसके शासन के साथ जारी रहता है। पौलुस ने फिलिप्पियों 2:9-11 में इन शब्दों के साथ वर्णन करते हुए मसीह के महिमान्वित किए जाने के बारे में लिखा :

> परमेश्वर ने भी उसे ऊँचा किया और उसको वह नाम प्रदान किया जो सब नामों में श्रेष्ठ है। ताकि स्वर्ग में, पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे यीशु के नाम में प्रत्येक घुटना झुक जाए। और पिता परमेश्वर की महिमा के लिए प्रत्येक जीभ मान ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है। (फिलिप्पियों 2:9-11)

पुन: पौलुस ने इस चरण के दौरान मसीह के विषय में कम से कम दो महत्वपूर्ण बातों को दर्शाया। पहली, मसीह ने ब्राह्मांड के शासक के रूप में महिमान्वित किए जाने के रूप में अपने महिमामय रूप को पुन: प्राप्त किया जिसके समक्ष हर प्राणी ने समर्पण और आराधना के साथ दण्डवत किया। दूसरी, मसीह सर्वाभौमिक सर्वोच्चता की उच्च, महिमान्वित अवस्था में भी दीन बना रहा। आखिरकार, सृष्टि पर उसके शासन का उद्देश्य भी उसकी स्वयं की महिमा नहीं परन्तु पिता को महिमा देना था।

अब पौलुस ने फिलिप्पियों में इस विचार को प्रस्तुत किया क्योंकि वह चाहता था कि विश्वासी मसीह के उदाहरण का अनुसरण करें। आखिरकार, यदि परमेश्वर के पुत्र ने अपनी इच्छा से ऐसी दीनता के

प्रति समर्पित कर दिया तो उसके सेवकों को भी दीन बनना चाहिए। और यदि मसीह की दीनता ने कष्टों और मृत्यु में दृढ़ बने रहने में उसकी सहायता की तो दीनता दृढ़ बने रहने में हमारी सहायता भी कर सकती है। और फिलिप्पियों 2:2-4 में विशेषकर पौलुस का यही तर्क था जहां उसने ये निर्देश लिखे :

> एकचित्त होने, एकसमान प्रेम रखने, एक जैसी भावनाएं रखने और एक ही लक्ष्य पर केन्द्रित होने के द्वारा मेरा आनन्द पूरा करो। द्वेष से और अहंभाव से कुछ न करो, परन्तु दूसरों को नम्रतापूर्वक अपने से अधिक श्रेष्ठ समझो। प्रत्येक व्यक्ति मात्र अपने हित का ही नहीं बल्कि दूसरों के हित का भी ध्यान रखे। (फिलिप्पियों 2:2-4)

दीनता धार्मिक जीवन और विश्वास में दृढ़ बने रहने में सहायता करती है। एक ओर यह हमें समान विचारधारा वाले बनने, एकता की रचना करने, दूसरों को प्रेम करने और उन्हें सम्मान देने और उनकी जरुरतों को पूरा करने के योग्य बनाती है। वहीं दूसरी ओर, यह हमें इस बात को स्मरण करने में सहायता करती है कि पिता हमारे विश्वास और वफादारी के योग्य है, तब भी जब हमारी परिस्थितियां दयनीय होती हैं, तब भी जब हम सताए जाते हैं, तब भी जब हम शहीद हो जाते हैं।

आशावाद

दृढ़ता के माध्यम के रूप में विश्वासियों में दीनता को उत्साहित करने के अतिरिक्त पौलुस ने आशावाद, अर्थात् जीवन में सकारात्मक और आशापूर्ण दृष्टिकोण, के महत्व पर बल दिया। आधुनिक जगत में लोगों द्वारा आशावाद को मूर्खतापूर्ण प्रयास के रूप में समझना कोई असामान्य बात नहीं है, अर्थात् ऐसा प्रयास जो वास्तविक संसार के अनुरूप नहीं है परन्तु केवल यह दिखावा करता है कि बातें वास्तविकता से बेहतर हैं। परन्तु पौलुस का आशावाद ऐसा नहीं था। उसका आशावाद यथार्थपूर्ण था। उसने जिन्दगी में बुरी बातों का तिरस्कार नहीं किया- वास्तव में, उसने उनके द्वारा खतरा महसूस किया। वस्तुत: पौलुस का आशावाद अच्छी बातों पर ध्यान देने का विवेकपूर्ण निर्णय था न कि बुरी बातों पर । यह परमेश्वर की उपलबधता और वर्तमान जगत में आशीषों से एवं भविष्य में परमेश्वर द्वारा प्रदान किए जाने वाले छुटकारे और पुरस्कारों की आशा से उत्पन्न हुआ था।

उदाहरण के तौर पर, कारागृह में उसके कष्टों के दौरान जब वह सुसमाचार के पाखण्डी प्रचारकों द्वारा मुश्किलों को सह रहा था तो उसने उन आशीषों पर ध्यान देने का चुनाव किया कि चाहे प्रचारकों के उद्देश्य बुरे थे, फिर भी मसीह का प्रचार हो रहा था। फिलिप्पियों 1:17 और 18 में उसके वर्णन को सुनें :

> परन्तु अन्य मसीह का प्रचार सच्चाई से नहीं परन्तु द्वेषभाव से इसलिए करते हैं कि कैद में मेरे कष्ट और भी बढ़ा दें। तो क्या हुआ? चाहे दिखावे से या सच्चाई से, हर प्रकार से मसीह का प्रचार तो हो ही रहा है, और इससे मैं आनन्दित हूँ। (फिलिप्पियों 1:17-18)

पौलुस की भावनात्मक अवस्था जटिल थी। एक ओर तो वह कष्ट सह रहा था। परन्तु दूसरी ओर उसने बुरी बातों की अपेक्षा अच्छी बातों पर ध्यान लगाने का विवेकपूर्ण निर्णय लिया। और इस विकल्प ने उसे कारागृह के कष्टों को झेलने और इन प्रचारकों के हाथों से दुर्व्यवहार को भी झेलने में सहायता की। और फिलिप्पियों 4:6-8 में कलीसिया को पौलुस की सलाह उसके व्यवहार के अनुरूप थी। वहां उसके शब्दों पर ध्यान दें :

> किसी बात की चिन्ता न करो, परन्तु प्रत्येक बात में प्रार्थना और निवेदन के द्वारा धन्यवाद के साथ तुम्हारी विनतियां परमेश्वर के समक्ष प्रस्तुत की जाएं। तब परमेश्वर की शान्ति जो संपूर्ण समझ से परे है, मसीह यीशु में तुम्हारे हृदयों और

> विचारों की रक्षा करेगी। अन्ततः हे भाइयो, जो बातें सत्य हैं, जो आदरणीय हैं, जो न्यायसंगत हैं, जो निर्मल हैं, जो प्रिय हैं, जो प्रशंसनीय हैं और यदि कोई सद्‌गुण या प्रशंसायोग्य गुण हैं, तो उन पर ध्यान दिया करो। (फिलिप्पियों 4:6-8)

आशावादी रूप में सोचना और चिंता एवं हताशा के विरुद्ध लड़ना हमारे हृदयों और मनों की रक्षा के लिए परमेश्वर को पुकारने का एक साधन है। और इसलिए यह दृढ़ बने रहने का भी एक साधन है।

आनन्द

अंत में, नम्रता और आशावाद के अतिरिक्त पौलुस ने यह भी सिखाया कि आनन्द की विचारधारा मसीही दृढ़ता एक बहुत बड़ी सहायता है। एक बात तो यह है कि स्वयं पौलुस ने तनावपूर्ण परिस्थितियों में दृढ़ बने रहने के लिए आनन्द को प्राप्त करने पर ध्यान दिया। और अपने उदाहरण के द्वारा उसने फिलिप्पी के विश्वासियों को भी ऐसा ही करने को उत्साहित किया। उदाहरण के तौर पर फिलिप्पियों 1:18 से 20 में पौलुस ने इस प्रकार से आनन्द के विषय में कहा :

> मैं... आनन्दित रहूँगा भी, क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम्हारी प्रार्थनाओं और प्रभु यीशु मसीह के पवित्र आत्मा की सहायता से इसका परिणाम मेरी स्वतंत्रता ही होगा। मेरी सच्ची अभिलाषा और आशा यही है कि मैं किसी बात में लज्जित न होऊँ, बल्कि सदैव की भाँति मसीह की महिमा चाहे मेरे जीवन के द्वारा या मृत्यु के द्वारा अब भी मेरी देह से होती रहे। (फिलिप्पियों 1:18-20)

पौलुस का डर उचित था कि शायद उसे मार डाला जाएगा। और फिर भी, अपनी मृत्यु के नकारात्मक पहलुओं पर ध्यान लगाने की अपेक्षा उसने अपनी मृत्यु के सकारात्मक परिणाम पर ध्यान लगाया; वह आशावादी था। और फलस्वरूप वह आनन्दित हो सका।

ध्यान दें कि इस विषय में पौलुस का आनन्द पीड़ा और कष्ट का अपरिपक्व इनकार नहीं था, और न ही प्रसन्नता का अत्याधिक मनोभाव था। इसके विपरीत, जैसा हम देख चुके हैं, पौलुस की भावनाओं में काफी उदासी और कष्ट भी मिले हुए थे। परन्तु अपनी परेशानियों के बावजूद पौलुस वास्तव में जीवन की अच्छी बातों की ओर देख सका और उन पर आनन्दित हो सका। वह साहसी मृत्यु के द्वारा मसीह को सम्मान देने के बारे में सोचकर संतुष्ट हो सका, और मसीह के महिमान्वित होने पर प्रसन्न हो सका। और उस संतुष्टि एवं प्रसन्नता ने आनन्द की रचना की। पौलुस ने केवल आनन्द को ही महसूस नहीं किया, बल्कि उसने सच्चे आनन्द को महसूस किया। और इस आनन्द ने उसे आगे बढ़ने और अपने कष्टों को उद्देश्य प्रदान करने की चाहत दी।

पौलुस ने फिलिप्पी में अपने मित्रों को ऐसे ही व्यवहार को प्राप्त करने के लिए उत्साहित किया ताकि उनका आनन्द उन्हें दृढ़ बनने में उनकी सहायता करे। फिलिप्पियों 4:4-6 में उन्हें दी गई उसकी सलाह को सुनें :

> प्रभु में सदैव आनन्दित रहो; मैं पुनः कहता हूँ कि आनन्दित रहो... प्रभु निकट है। किसी बात की चिन्ता न करो। (फिलिप्पियों 4:4-6)

पौलुस ने फिलिप्पियों को आनन्दित होने के लिए उत्साहित किया क्योंकि प्रभु निकट था, चाहे आवश्यकता के समय उनकी सहायता के रूप में, या फिर उस राजा के रूप में जो संपूर्ण पृथ्वी पर अपने राज्य को लाने के लिए पुनः लौटेगा। कैसा भी विषय हो, आनन्द फिलिप्पियों को चिंता को दूर करने के लिए प्रेरित करेगा और योग्य बनाएगा। और इसलिए, यह प्रभु के आगमन तक दृढ़ बने रहने में उनकी सहायता करेगा।

पौलुस की विचारधारा के समान अपनी विचारधारा बनाने, एवं नम्रता और आशा और आनन्द पर केन्द्रित रहने के द्वारा हम चिंता और निराशा के विरुद्ध स्वयं को सामर्थी बना सकते हैं। कठिनाइयां अवश्य आएंगी, और हम कष्ट सहेंगे, कभी-कभी तो बहुत अधिक। इसलिए जब ऐसा होगा तो हमें पौलुस के उदाहरण और उसकी सलाह को याद रखना जरुरी है। हमें नम्र आत्मा के साथ अपने कष्टों को सहने, और वर्तमान एवं आने वाले जीवन की अनेक भली बातों के बारे में सोचकर आशापूर्ण बने रहने की आवश्यकता है। और हमें अपने जीवन में आनन्द देने वाली बातों पर आनन्दित होने का विवेकपूर्ण निर्णय लेने के द्वारा अपनी परिस्थितियों की विपत्तियों पर विजय प्राप्त करनी है। इन रूपों में परमेश्वर की सहायता से हम दृढ़ बने रहने के लिए सामर्थ प्राप्त कर सकते हैं।

दृढ़ता की सेवकाई

अब जब हमने दृढ़ता की प्रकृति और विचारधारा की जांच कर ली है, तो हम अपने तीसरे शीर्षक की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं- एक दूसरे के प्रति हमारे कार्यों के माध्यम से व्यक्त कलीसिया की दृढ़ता की सेवकाई।

पौलुस ने पहचान लिया था कि उसके प्रति फिलिप्पियों की सेवकाई ने उसकी अपनी सेवकाई के कई चरणों में दृढ़ बने रहने में उसकी सहायता की थी, उसके वर्तमान कारावास में भी। कई बार उन्होंने आर्थिक और भावनात्मक रूप में उसकी सहायता की थी। और उन्होंने कारागृह में उसकी सेवा करने के लिए इपफ्रुदीतुस को भी भेजा था। हम पौलुस के प्रति उनकी सेवकाई को आर्थिक सहायता, उत्साहवर्द्धन और भौतिक उपस्थिति के रूप में सारगर्भित कर सकते हैं। इन सब रूपों में फिलिप्पियों ने पौलुस के प्रयत्नों को सहारा दिया एवं अधिक दृढ़ता प्राप्त करने के लिए सामर्थ दी।

उदाहरण के लिए फिलिप्पियों 4:13 और 14 में पौलुस के भावविभोर शब्दों को सुनें :

> **मैं उसके द्वारा जो मुझे सामर्थ प्रदान करता है, सब कुछ कर सकता हूँ। फिर भी मेरी विपत्ति में मेरा साथ देकर तुमने अच्छा कार्य किया है। (फिलिप्पियों 4:13-14)**

कुछ रूपों में, ये साधारण पद पौलुस के प्रति फिलिप्पियों की सेवकाई और उनके प्रति उसकी भावनाओं के केन्द्र को प्रस्तुत करते हैं।

पौलुस के पास फिलिप्पियों की भेंट लेकर इपफ्रुदीतुस के आने से पहले प्रेरित दृढ़ बने रहने के लिए प्रभु से सामर्थ को प्राप्त कर रहा था। परन्तु उसको दूसरों से नैतिक सहायता प्राप्त नहीं थी, और फलस्वरूप उसकी आशा और उसका आनन्द कमजोर पड़ गया था। वह दृढ़ बना हुआ था, परन्तु वह एक कठिन कार्य था। परन्तु फिलिप्पियों की भेंट ने आर्थिक सहायता प्रदान की जिसने उसके कष्टों को कम कर दिया, जिससे दृढ़ बने रहना कुछ आसान हो गया था। और भेंट एवं इपफ्रुदीतुस को भेजने के माध्यम से व्यक्त पौलुस के लिए उनकी परवाह ने उसे उत्साह प्रदान किया एवं उसकी आशा और आनन्द को पुन: प्राप्त करने में सहायता की। और निसंदेह इपफ्रुदीतुस की भौतिक उपस्थिति ने न केवल पौलुस की भौतिक जरुरतों की पूर्ति की, बल्कि और भी अधिक दृढ़ बनने के लिए उसे संगति और मित्रता भी प्रदान की।

और इसलिए पौलुस ने हृदय की गहराई से धन्यवाद देते हुए फिलिप्पियों से कहा कि तुम्हारे द्वारा मेरी विपत्तियों में सहभागी होना अच्छा था। पौलुस ने वास्तव में और सच्चाई से उनकी सेवकाई की सराहना की। और इसने उन्हें अपने मित्रों के रूप में मानने में राहत और आनन्द प्रदान किया, जिससे उसने अपने विश्वास को मजबूत रखने और मसीह को सम्मान देने के मार्गों में जीने के द्वारा दृढ़ बने रहने के लिए उत्साह और सहायता प्राप्त की।

और पौलुस ने भी अपनी सेवकाई का उद्देश्य फिलिप्पियों को उनके अपने कष्टों में दृढ़ बने रहने के लिए सहायता करना रखा था। जैसा हम फिलिप्पियों 1:3 और 4 में पढ़ते हैं, उसने उनके लिए प्रार्थना की। उसने उन्हें यह सिखाने के लिए पत्री लिखी कि किस प्रकार दृढ़ बना जाता है। और इससे बढ़कर, उसने इपफ्रुदीतुस को उनके प्रति सेवकाई करने के लिए भेजा, शायद कलीसिया के अगुवे के रूप में।

आधुनिक कलीसिया में हम फिलिप्पियों द्वारा पौलुस की भौतिक सहायता से बहुत कुछ सीख सकते हैं। पूरे संसार में ऐसे अनेक मसीही हैं जो भौतिक रूप से जरुरतमंद हैं। कुछ इतने गरीब हैं कि खाना और कपड़ा भी उनके लिए एक निरन्तर चुनौती बनी रहती है। अन्य लोगों पर संसार के दुष्ट लोगों द्वारा अत्याचार किया जाता है। कुछ को गुलामी में बेच दिया जाता है और उनसे दुर्व्यवहार किया जाता है। और निसंदेह संसार के हर कोने में मसीहियों द्वारा अनुभव की जाने वाली अन्य वास्तविक आवश्यकताएं भी हैं। और इन विश्वासियों के प्रति सेवकाई करने का एक तरीका, उनको आशा देने और दृढ़ बने रहने में उनकी सहायता करने का एक मार्ग, उनकी भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करना था।

अपने प्रेम और उत्साहवर्द्धन के माध्यम से पौलुस के प्रति फिलिप्पियों की सेवकाई से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। उन्होंने पौलुस को केवल धन ही नहीं भेजा था; उन्होंने अपना प्यार भी भेजा था। इपफ्रुदीतुस के माध्यम से उन्होंने पौलुस के समक्ष प्रकट किया कि वे उसके बारे में सोच रहे थे, और कि जिस प्रकार वे उसके हृदय में बसे थे उसी प्रकार वह भी उनके हृदय में बसा था।

आधुनिक मसीहियों को भी दृढ़ बने रहने के लिए उत्साह की आवश्यकता है। हम कलीसिया में, या टेलीफोन पर, या पत्र या संदेशवाहक, या कई रूपों में उत्साह के शब्दों को कह सकते हैं। परन्तु तर्क यह है कि हमें लोगों को यह बताने के लिए कि हम उनसे प्रेम करते हैं और कि वे भुलाए नहीं गए हैं, कदम आगे बढ़ाना है।

और इससे बढ़कर, हम लोगों के साथ बैठकर, उनके साथ रहकर, उनकी भौतिक आवश्यकताओं में उनकी सहायता करके उनके साथ समय व्यतीत कर सकते हैं, उसी प्रकार जिस प्रकार फिलिप्पियों ने इपफ्रुदीतुस को पौलुस के पास भेजा था। कलीसिया में भी अनेक लोग अकेले हैं, कइयों को मित्र की आवश्यकता है। और कई अन्यों को आम बातों जैसे खरीददारी करने, सफाई करने, या उनकी एवं उनके परिवारों की देखभाल करने में सहायता की आवश्यकता होती है। विश्वासियों के साथ व्यक्तिगत उपस्थिति भी दृढ़ बने रहने में सहायता करने का अच्छा तरीका है।

और हम पौलुस द्वारा फिलिप्पियों के प्रति की गई सेवकाई से भी बहुत कुछ सीख सकते हैं। हम उन्हें सीखा सकते हैं कि ठोस धर्मशिक्षा और व्यावहारिक सलाह से किस प्रकार दृढ़ बने रहा जा सकता है। यदि हम कलीसिया में अधिकार के स्तरों पर हैं तो हम कलीसिया की उन मार्गों में अगुवाई कर सकते हैं जो उत्साहवर्द्धक और उत्तरदायित्वपूर्ण हों, जो शब्दों और उदाहरण के द्वारा दर्शाता हो कि दृढ़ता भक्तिपूर्ण और संभव है। और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम चाहे जो भी हैं और जहां भी हैं, हम हमेशा प्रार्थना कर सकते हैं जिससे स्वयं परमेश्वर हमारी विनती के प्रत्युत्तर में अन्य विश्वासियों को दृढ़ बनने के लिए सामर्थ प्रदान करेगा।

उपसंहार

इस अध्याय में हमने पवित्रशास्त्र में पाई जाने वाली पौलुस द्वारा फिलिप्पियों को लिखित पत्री की जांच की है, इसमें हमने उसकी पृष्ठभूमि जो पत्री के ऐतिहासिक और सामाजिक संदर्भ की रचना करती है, पत्री की संरचना और विषयवस्तु और अंत में मसीही कलीसिया के जीवन में इस पत्री के आधुनिक प्रयोग के बारे में भी चर्चा की है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

फिलिप्पियों को लिखी पौलुस की पत्री में कष्टपूर्ण एवं तनावपूर्ण समय में भी अपने विश्वास में स्थिर रहने के विषय में, अपने पवित्र परमेश्वर के सामने धार्मिक रूप से जीवन जीने के विषय में हमें सिखाने के लिए अनेक गहन और अद्‌भुत सत्य पाए जाते हैं। जब हम स्वयं को पौलुस की शिक्षाओं के प्रति समर्पित करते हैं तो हम महसूस करेंगे कि दृढ़ता कितनी महत्वपूर्ण है, और हम इस विस्मयकारी कार्य के प्रति समर्पित होने के लिए अति उत्साहित होंगे। और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जब हम पौलुस की सलाह का अनुसरण करने के द्वारा हमारी अपनी दृढ़ता में सफल होते हैं, और दृढ़ बने रहने में दूसरों की भी सहायता करते हैं, तो हम अपने महिमामय प्रभु यीशु मसीह को महिमा और सम्मान प्रदान करेंगे।